

हिंञ्जे वनवुन



संकलनकर्ता :  
लक्ष्मीश्ररी कान्दू



# हिंजो वनवुन ॐ

संकलनकर्ता :  
लक्ष्मीश्ररी कान्दरू

प्रकाशन कार्य :  
बदरी नाथ कान्दरू  
कुटीर निवासी, लेन नं० 4  
ईश्वर नगर, उदयवाला  
बोड़ी, जम्मू  
दूरभाष : 552695

प्रथम संस्करण	1000 प्रतियां	जनवरी 1999
दूसरा संस्करण	1000 प्रतियां	सितम्बर 2001

मूल्य : 35/- रु०

## दो शब्द

नमस्कार !

काश्मीरी भाषा की जो काव्य पंक्तियाँ मैं आप के समक्ष रखने जा रही हूँ, वे “वनवन-हुरि” के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह शास्त्रीय संगीत पर आधारित वह लोक गीत है जिसका प्रयोग काश्मीरी हिन्दू जाति शादी-ब्याह, यज्ञोपवीत आदि विशेष पर्वों पर बड़ी श्रद्धा से करते हैं।

“वनवन-हुरि” मूलतः संस्कृत भाषा के श्लोक हैं जिन्होंने हिन्दी तथा काश्मीरी भाषाओं के शब्दों को अपने में समा कर, एक विकसित रूप में जन-साधारण के शुभ पर्वों में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। आधुनिकीकरण के नाम पर हमारा समाज जिस पश्चिमीकरण की ओर अग्रसर है, उसकी झलक जीवन के हर क्षेत्र में स्पष्ट दिखाई देती है। संगीत इस से अछूता नहीं रहा है। पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव के बावजूद “वनवुन” की अनिवार्यता आज भी उतनी ही तीव्र एवं अटल है जितनी कई दशक पूर्व थी। परन्तु “वनवुन” कहने वाली दक्ष महिलाओं में कमी आने के कारण इस से



सम्बन्धित विषमताएं बढ़ गई हैं। यही कारण है कि पूवर्जों की इस धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ा।

मैं कोई लेखिका नहीं हूँ और न ही “वनवुन” को एक पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत करके मैं ऐसा कोई दावा करती हूँ। रुचि के कारण, इन श्लोकों को समय-समय पर माताओं, बहिनों से सुनकर मैं नोट करती गई। शनैः-शनैः इन की संख्या शतकों में आ गई। मुझे विचार आया कि क्यों न इन्हें एक पुस्तिका का रूप देकर जन-साधारण तक पहुँचाया जाये।

इस सम्बन्ध में पहले ही कुछ प्रकाशन देखने को मिला है परन्तु मेरा प्रयास है कि व्याकरण तथा अन्य बिन्धुओं पर अधिक ज़ोर डाले बिना ही इसको सरल एवं सटीक ढंग से प्रस्तुत करूँ। मेरा प्रयास कहाँ तक सफल रहा है, यह मैं आप पर छोड़ देती हूँ।

इस पुस्तिका को आरम्भ से लेकर अन्तिम रूप देने तक के लिये प्रेरित करने का श्रेय मास्टर पुष्कर नाथ जी तथा मेरे परिवार सदस्यों को जाता है। उनके अमूल्य प्रोत्साहन एवं सहयोग के बिना यह कार्य असम्भव था। इस मार्गदर्शन और सहयोग के लिये मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। और आशा करती हूँ कि आप मेरे इस प्रयास को पसन्द करेंगे।

धन्यवाद

लक्ष्मीश्ररी (कान्दरू)

प्राचीनकाल से परम्परागत बहती आरही काव्य धारा जिस का उपयोग षोडश संस्कारों में सर्वोत्तम तथा सर्वमान्य यज्ञनोपवीत तथा विवाह संस्कारों में होता आ रहा है - को भविष्य में भी अपनी मधुर गरिमा से प्रवाहित रहने के लिए इस को अनुप्राणित करने का अपनी तरह का एक सफल तथा अनुपम प्रयास श्रीमती लक्ष्मीश्री (कान्दरू) की इस लघुकाव्य पुस्तिका में देखने को मिलता है । इन्होंने शोत्रसाधन का प्रयोग करके इन श्लोकों को कण्ठस्त कर पुस्तिका का रूप देकर एक उत्तम कार्य किया है जिस के लिए कश्मीरी हिन्दु समाज इनका ऋणी रहेगा ।

मेरी हार्दिक कामना है कि भगवान इनको इस सामाजिक सत्कर्म के लिए शुभ फल प्रदान करे ।

शत आशीष के साथ

‘पुष्करनाथ’

आचार्य पारिजात

अध्ययन केन्द्र

आनन्द नगर, बोडी

## अनुक्रमणिका

### भाग - १ कोरि खान्दर वनवुन

लिवुन.....	1
मस मुचरावनस वनवुन.....	3
दपुन .....	4
ज्युन चटुन .....	5
क्रूल खारून.....	6
मअंजेरात .....	8
महारेनि महाराजस मअंज लागनि .....	12
दिवगोन .....	14
दिवत गूलि.....	25
मस पारनस वनवुन.....	26
तँरगअ गँडनस वनवुन.....	28
कोरि लगनस वनवुन.....	30
पोश-पूजा.....	50
शंकर पूजा.....	52
कूर वअरिव नेरवुन वनवुन .....	57

## भाग - २ नेच्चि खान्दर

महाराज नेरनस वनवुन.....	59
पलव लागनस वनवुन.....	60
लग्न चीरि वनवुन.....	65
राम-राम भजन.....	65
वीगिस नचुन.....	69
नोशि अन्न विजि वनवुन.....	74

## भाग - ३ मेखला वनवुन..... 76

## भाग - 4 मकानस अचुन..... 122



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

## भाग - १

### कोरि खान्दर वनवुन

#### (लिवुन)

- 001 शेकलम करिथ हेमव वनवोनुय ।  
रूति फल दिती माजि भवानी ॥
- 002 प्रजि पेठ अनितोन ब्रह्मण छअरिथ ।  
लिवनस क्युत दियि सात चअरिथ ॥
- 003 नवि नेशपतरे रुत द्राव साथा ।  
जांगि हुन्द दाता श्री भगवान ॥
- 004 सोन सन्दि टोन्गरे रोप सन्दि बेलो ।  
बालय वालुस शेलय म्येच ॥
- 005 थोद तुल लछ्छजी हाय वाल रवकन ।  
मुरि दार चद्रय तारकन ॥

- 006 म्येचि तय पअनिस खअच खम्बीरो ।  
गम्भीर असि कअर गरनावय ॥
- 007 असि कअर म्योचि कअम रचि बोध्वारे ।  
कमि हारि कअरनय गरनावय ॥
- 008 असि कअर म्येचि कअम प्रिछिय गोरस ।  
ती आव परमीश्वरस खोश ॥
- 009 गरनोवथय गरुडस खसिथ ।  
बौविनय लक्ष्मी स्वस्ती आय ॥
- 010 गरनावनस नछतर सोवुयि ।  
भवअनि आय पोश लोवुयि ह्योथ ॥
- 011 गरनावनस जन्गि कुसुयि ओयिय ।  
मंगला दीवी त नन्दकीश्वर ॥
- 012 ख लोग भवनस थव आव कोन्गस ।  
सन्ज ह्योत खान्दर करनस ॥
- 013 सन्ज ह्योत खान्दरस कुलि-कअटि सग्वय ।  
कन्ज दियुत वुलगे त खअर हतस ॥
- 014 दपने नेरनस जन्गि कुस ओयिय ।  
मंगला दीवी त नन्दकिश्वर ॥



मस मुचरावनस वनवुन

- 015 ओं सेदि दाता वेग्न हरतारो ।  
गणपत यारय मस मुचरय ॥
- 016 शोकलम करिथ मस मुचरअयेय ।  
शोभ फल दितीय माजि भवअनी ॥
- 017 मस मुचरनस जन्गि कुस ओयय ।  
मगँला दीवी त नन्दकिश्वर ॥
- 018 कूरैय मसतस गन्ड मुचरोयय ।  
दुकि-दुकि खन्ड हन आपरोयय ॥
- 019 मस मुचरायेय खेशे-खेशे ।  
विश्वामित्रनि कूरियेय ॥
- 020 मस मुचरोयय बालय-वालय ।  
बालय चन्द्रनि कूरियेय ॥
- 021 मस मुचरोयय रूमय-रूमय ।  
भुमय सीननि कूरियेय ॥
- 022 मस मुचरोयय दावय-दावय ।  
भावयि कोरयय माजि भवानी ॥

023 मस मुचरोयय दअछिने दारे ।  
हारे ब्रारे सेदा स्योद ॥

◆◆◆◆◆◆

( दपुन )

024 दपनुक सामान मोल प्योय जअरी ।  
कपटुय इयेक सरदअरिये ॥

025 सीता मअली दपने द्रायिखय ।  
जनुक राजुन घर चायखय ॥

026 नून चोचि अतगत ह्मेथ तोर द्रायिखय ।  
दशरथ राजुन घर चायखय ॥

027 दपने द्रायिखय खासन खासन ।  
पासुक म्यूलुय सोन गुनसा ॥

028 दपने द्रायिखय मालिनि पखिसय ।  
नखिसय अनिथय मोहरअ त लाल ॥

029 दपने द्रायिखय अन्दिये-अन्दिये ।  
दपवअनि गण्डथय सोन बन्दिये ॥



- 030 दपने द्रायिखय पननिस पूरिस ।  
दपवअनि अनिथय टूरिस केथ ॥
- 031 दपने द्रायिखय दछि डूरि मन्जिये ।  
अछदअरि यजमन बाईये ॥



( ज्युन चटुन )

- 032 सोन सन्जि मकचे रोप सुन्द दन छुयि ।  
वन खअति चटुन ँटअने ॥
- 033 सोन सन्जि मकचे दन दुब दार छुयि ।  
बब सुबदार छुयि सन्ज करान ॥
- 034 ज्युन चोट कारन्दव बेयि तबरदारव ।  
अज्जी खबर गयि बान्धवन ॥
- 035 वासदीव राजनेन तबरदारन ।  
कृष्ण जीनेन बान्धवन ॥



## (क्रूल खारून)

- 036 दीवियव सग द्युत वस्तर वनस ।  
दीवता वथ हावनस छिस ॥
- 037 अस्त-अस्त खअचखवय डढंख वनस ।  
दस्त-दस्त वअजिथंय जाय लछजि ॥
- 038 समिथ खसवय डढंख वनस ।  
नेमिथ वालय जाय लछाजे ॥
- 039 पोनि फिर टठजे लछिज डाल हंगस ।  
यथ राज रंगस छु नमस्कार ॥
- 040 आरवलि लछजे मोत्त राज गन्डवय ।  
दयस मंगवथ आधेकार ॥
- 041 रोप पल कांकन छुनिथय क्रूल थाजे ।  
ओं ब्रारि माजे छि मअंजे राथ ॥
- 042 आंगनस सअनिस बबरे रोभिये ।  
धोबि आयि लर सानि नावने ॥
- 043 वोस्तकार बअई लदि सोठकव्य चीनी ।  
मोत्तहार ब्येनि कोर मोनेन गछ ॥

- 044 पथ ही थरे ब्रोंठ रंग चर्रे ।  
शाम सोन्दरि कोर मोनेन गछ ॥
- 045 क्रूलय थाजे जंग अनि माजे ।  
क्रूलस मोहरा त्रावसे, हटिस हारा त्रावसे ॥
- 046 क्रूल खोरुथय नेंदरे हचे ।  
सेन्दरे खोरुय बरिथय ॥
- 047 म्युल गोव मअंजे मरदे त क्रूलस ।  
मूलस वाचय मुचयया ॥
- 048 चन्दनवि राजदानि धअतवि हंग छुयि ।  
राजव रंग छुयि शोल दीवान ॥
- 049 वरि करेयथय वरि सोन्दरिये ।  
करि सोन्दरिये कोसमन क्राव ॥
- 050 वरि करयथ देगि तय पोन्सन्दिस दानस ।  
सोन हयि लोव लाग बर हंगस ॥
- 051 वरि करेय थय अनक दानस ।  
जनक ऋष सोन वर्गस चाव ॥
- 052 नवि लरि कन दरि हअरित्त चरे ।  
असि कअरि वरे लरे पेठ ॥

- 053 बाट नचि बोट चोचि हंग वचि नावय ।  
 क्रूल चोचि हावय प्रअप्यूनय ॥
- 054 जोतवनि लाल छी मन्ज मारकन ।  
 कशीर हिन्देन तारकन ॥
- 055 असि कर मंअजि रात बान्दवन किचये ।  
 लक्ष्मी हेचय नीरि नव ॥
- 056 शीरीनि फलेन कलाय कन्दन ।  
 दौलत मन्दन छे मन्जेरात ॥



## (मअंजेरात)

- 057 दक्षिन किस बालस मअजि हुन्द तर द्राव ।  
 शर द्राव लालस छि मअंजेरात ॥
- 058 पादशाह बागस तुलमुलि नागस ।  
 त्रागस मन्ज फोल मंअजे पोश ॥
- 059 हीमाल पर्वतस फअलि मन्जि टूरी ।  
 चअटि-चअटि वअलिमय यूरिये ॥

- 060 वोन्या आयोव अथिं हेथ बही ।  
वनु मालि मअंजि मोल कहि छुय ॥
- 061 वल मालि वान्यो बेह सानि पेन्जे ।  
मअजि तोल पूरे डन्जे सान ॥
- 062 बेह मालि वासदीव राजनि पेन्जे ।  
अजि सानि लंजि ब्यूठ बुलबुल त काव ॥
- 063 कृष्ण महाराजो वअचयो होन्जे ।  
मअन्ज तोल पूरे डन्जे सान ॥
- 064 स्वर्ग खअच मअज तय मअंज आयि पानी ।  
मअन्जि कअर मेहरबानिये ॥
- 065 दिलिल अनि मअंज तय वति गय डलिये ।  
तति रअट साहेबजादन अफसरिये ॥
- 066 मअंजि कुल खोरमय दोध सअति सगवान ।  
तोहि दोन रछीनव श्री भगवान ॥
- 067 शहर खअर मअंज तय वति लअजि ठठिये ।  
असि अनि इखिये नावन केथ ॥
- 068 शहर खअर मअंज तय दान-दान छानवय ।  
खानमालेन करवय मअंजेरात ॥

- 069 मअंज येलि छअनि तय पत बअर पूरेन ।  
येति छेमय शूरेन मअंजेरात ॥
- 070 शहर खअर मअन्ज तय वति भरय काबन ।  
येति छेमय सहाबन मअन्जेरात ॥
- 071 दछ राठ खअचमय दारि तय हंगस ।  
अअलि तय रोगस छि मअन्जेरात ॥
- 072 दछि राठ खअचमय डबि दफतरसय ।  
राज अफसरसअथि छि मअन्जेरात ॥
- 073 मअन्जि सअति सूरत ब्येय रेंट पावा ।  
भावा कोरुय माजि भवानी ॥
- 074 लालव मअंजे मंग हो आई ।  
जगं हो आई रअचये ॥
- 075 यथ लरि शूभहन सोनसन्दि ठठिये ।  
यअहय लअर शालमहर बठिसअय पेठ ॥
- 076 क्रन्ड कड कण्ठमाल पोट करि दायेय ।  
अजि गन्डि यजमन बअयिये ॥
- 077 सर मन्ज रत्ना खोतमय पअनी ।  
चअनि दोह यछिमय नारअणी ।

- 078 मन्जि किति कन्डि अनि साहेबजादन सअनी ।  
कथा रूजयि त्रेन भवनन ॥
- 079 दोस दिच दसिलन लरि लज छअनी ।  
चअति दोह यछिमय नारअणी ॥
- 080 मअंजे रअचयि सोम्बरिन बअचयि ।  
वअचयि गंग जमना त सरस्वती ॥
- 083 शहर रवअर मअज तय असि वअच इअली ।  
कमि रंग बअलि थव अअइरअविथ ॥
- 084 असि कअर मअजिरात बान्दवन किचये ।  
लक्ष्मी हेचयेये नीरीनव ॥
- 085 जूनि सअति ताररव ज न ब्यीठ सअतरस ।  
असि राज-पोतरस मअजिरात ॥
- 086 वोजा आयोव रात लजिस बजुलि ।  
तेलि आव येलि फलि यम्बरजोलि पोश ॥
- 087 सोन तोलअयोव रचे-रचे ।  
मअज तोलअयोव तारचि सअति ॥
- 088 सोन लदय तारचि मोखत खोत इजनय ।  
चानि यकबाल फोलि लजनय पोश ॥

089 असि वअच मअंज तय खअच तापदानन ।

शहि जाफरानन छि मअंजेरात ॥

090 असि वअच मअंज तय खअच दरपरदन ।

येति सरकरदन छि मअंजेरात ॥

091 सथ मन मअंजि हन्दि वथ आयि मडनय ।

कस भगनानस छि मअंजेरात ॥

092 बुथि छक सब्ज तय रंग वोजजी ।

कमि वान अनिमख मोल्लजी ॥



(महारेनि महाराजस मअंज लागनि)

093 दोहस फ्यूरहम यारय बलिये ।

शामन छलिये खोर-फलिये ॥

094 महाराज लालो पादशाह पसन्दो ।

मअंजि मसनन्द हो प्रारान छुयि ॥

095 यजमन बाई अनतय थालयि ।

लाल हय जोवुयि मअंज लागहोस ॥



- 096 यजमन बाई शमादान जालतय ।  
मअंजि कोण्ड वालतय देवान खान ॥
- 097 पार्वती आई रथस खसिथ ।  
महाराजस लागव अथस मअंज ॥
- 098 उमायि जामय महा-गणेश आदन ।  
महाराजस लागव पादन मअंज ॥
- 099 दोहस ख्येथम दोध-भत मेडिये ।  
शामन लागय टेडिये मअंज ॥
- 100 आखो विलि तय ज़ाखो वखतय ।  
मअंज लागय पादशाह तखतस पेठ ॥
- 101 मअंज लागनस जंग अनितोहसे ।  
मंग छेयि मअंजि तय पोफ बअगरान ॥
- 102 पोफव कअरहय मअंजि नकअशी ।  
माजव कअरहय जाल सअजी ॥
- 103 पोफ आसय मोछि मअंज लागान ।  
मासय आसय कोछि ललवान ॥
- 104 माजव ह्योतखव खोनि ललवोनयि ।  
मामव छकिहय दोछि-दोछि ध्यार ॥

- 105 तेल फोल वोवथय चन्दन-कुल ज़ोये ।  
बब त मोजि ओये दुरि-भत ह्योथ ॥
- 106 यिम कम दुरि-भत वाजेनि आये ।  
हिन्दोस्तानचि हेन्द बाये ॥
- 107 यजमन बाई वग त्राव डेजिये ।  
ब्रंग आव कोतर खेजिये ह्योथ ॥
- 108 वोलरचेन गाड़न सोनसन्दि कडिये ।  
बेनिये बोयि आव हडिये ह्योथ ॥



( दिवगोन )

- 109 शोकलम करिथ वनवुन ह्योतुयि ।  
शोभ फल दितीय माजि भवानी ॥
- 110 सोन सन्दि टोंगरे रोप सन्दि बेलो ।  
बालय वालसि शैलय म्येच ॥
- 111 जमनायि जलय गगंय म्येचे ।  
दिवगोनस क्युत लिवसे ॥

- 112 गंग बल तोरमय गंगवा नोटुयि ।  
वोत्यम वोटुय लिवसे ॥
- 113 आकाशि वअछखय अम्बरावतिये ।  
श्री सरस्वतिये कानी लिव ॥
- 114 दोध के हर सअति कानी लिवसे ।  
ओर यियि ब्रह्मण खिर वथरोस ॥
- 115 वोशनारि थोवमय पोश बाग लिविथ ।  
दशरथ राज खोत श्रान करिथ ॥
- 116 स्वर्ग खोत सालिग्राम अरननि वेरे ।  
धर्मचि जाय लोग छांडने ॥
- 117 स्वर्गस खोतमय चन्दन टूपयि ।  
रूपय नाराणजूवने ॥
- 118 दिवगोनस सन्ज ह्योत धमयन्ती माजे ।  
तेल डूनि तय ग्येव श्रीफल ॥
- 119 खारसि तेल मरदे त बादाम ।  
आदन बोजीय लसिनय ॥
- 120 कलशस खारुस बादाम सासा ।  
दासस रूमय ऋषुण आय ॥

- 121 यूरि कुन मरेद तय तूरि कुन बेछोखो ।  
तारख जितिश वार रूख लेछेथो ॥
- 122 अर्श वअथिमिति अर्जन दीवो ।  
फर्शस पेठ छेयि कलशस जाय ॥
- 123 दिवगोनस ब्यूहम गोर ह्योथ पानय ।  
सोनसन्दि बानय वाहरोसे ॥
- 124 कलशिचि विजे रेथि वोथ नाराण ।  
कलशुक मण्डुल वाहरान ओस ॥
- 125 कलशिचि विजे दय टोठ्योयो ।  
पूजि ब्यूठूयो नारायण ॥
- 126 बडि आख बोलत दय सन्दि लोलय ।  
शोलय दिववुन ट्योकुय लाग ॥
- 127 दातो करयो ताबेदअरी ।  
गोरन गोन्डयो नअरीवन ॥
- 128 मन्ज रोबरवानस वहीमिय डूनी ।  
सोन कोसम तय मादलि पोश ॥
- 129 सदाशेवस माँगस मन्गे ।  
कन्यक जन्गे अनोसे ॥

- 130 कलशस पूज कर वोत्मय नरयो ।  
हरी हरो हलदरो ॥
- 131 कलशिचि विजि वछ अन्तय दारय ।  
कलशस पूज कर वारय पअठि ॥
- 132 कलशस पूज अर्ग त पोशो ।  
सोरिव तप ऋषव सदाशिव ॥
- 133 पूरे खोतरखो सिरिया वेशो ।  
दूरे कोरमय नमस्कार ॥
- 134 चय छुख सारिनयि प्राणावेशो ।  
सोरिव तप ऋषव सदाशिव ॥
- 135 फागनि फोलहम भेदमुशुक पोशो ।  
गोशस रअटथम थरि पेठ जाय ॥
- 136 गोडनी सोन्तअ आहम खोशो ।  
सोरिव तप ऋषव सदाशिव ॥
- 137 चित्री फोलहम विरिकुम पोशो ।  
गोशस रअटथम जंगलय जाय ॥
- 138 नवरेह दोहो आहम खोशो ।  
सोरिव तप ऋषव सदाशिव ॥

- 139 पेठय बान फोलहम चेरय पोशो ।  
गोशस रअटथम कुलिस पेठ जाय ॥
- 140 म्येव चोन हुमन त यग्येन खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 141 आदन फोलहम बादाम पोशो ।  
गोशस रअटथम परबत आय ॥
- 142 बर्ग चोन सबज तय म्येव चोन खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 143 वहकी फोलहम कोसम पोशो ।  
गोशस रअटथम थरि प्येठ जाय ॥
- 144 चअयि हो ठाकुर सअबस खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 145 जीठी फोलहम गुलाब पोशो ।  
गोशस रअटथम वारि मन्ज जाय ॥
- 146 बर्ग चोन वोजुल तय मुशुक चोन खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 147 हअरी फोलहम घअरी पोशो ।  
गोशस रअटथम सरस मन्ज जाय ॥

- 148 दहमन त कअशन छहमो खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 149 श्रावनि फोलखो दत्तरी पोशो ।  
गोशस रअटथम छोटस पेठ जाय ॥
- 150 चअयि छुख सदाशिवस खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 151 भअदरि फोलखो कपस पोशो ।  
गोशस रअटथम डारस मन्ज जाय ॥
- 152 यह लूक परि लूक परदय पोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 153 अअर्शाद फोलहम जाफरि पोशो ।  
गोशस रअटथम वारि मन्ज जाय ॥
- 154 रअग्न्यायि भूतीश्वर आहम खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 155 कार्तिक फोलहम कोङ्गय पोशो ।  
गोशस रअटथम पोपर जाय ॥
- 156 चअचि हो ब्रह्मण तीजस खोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥

- 157 सोपूरि वते लोगमुत्त रअशो ।  
शारद बालस छि दिवना जान ॥
- 158 माजि शारदायि हुन्द दर्शुन डेंशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 159 तुलमुलि वते लोग गलगोशो ।  
गंगय बलस छि दिवना जान ॥
- 160 बुथि शेरि वसवनि लअजिमो त्रेशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 161 अनन्तनाग वते लोग गलगोशो ।  
झायि वहरि बटन आव मटन मलमास ॥
- 162 चाकबल पेत्रन मोकल्येय त्रेशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 163 पहलगाम वते लोग गलगोशो ।  
अमरनाथ दिवना जान ॥
- 164 सदाशिव सुन्द दर्शुन डेंशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 165 शुपयन वते लोग गलगोशो ।  
दिगामि नागस छि दिवया जान ॥



- 166 कन्यकन बालकन मोकल्येय त्रेशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 167 यज्मनयि धर्म पोरोशो ।  
जायि-जायि बनाविथ देवान-खान ॥
- 168 सोठकूवि चीनि तय मोक्तवि पोशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 169 कन्यका रछेयि वनक्येव ऋषौ ।  
खअरिथ नियख इन्द्रख वन ॥
- 170 सीतायि ओसुयि सोन सुन्द केशो ।  
सोरिव तप ऋषेव सदाशिव ॥
- 171 वोशनारि वुज लिव मूला दतियेय ।  
लोह पूचि वेल वोत कन्य श्रानस ॥
- 172 पीरे तल प्येमेयि मरेद रअखयि ।  
हकय आयि भवानि जाफल हेथ ॥
- 173 कूजन चोरन कन्यकय चोरय ।  
मोल तय गोर छुयि गुड़ दिवान ॥
- 174 वोशनारि वुशिन्नेवमय गङ्ग वोन्नीय ।  
मधमति चोनुय करुस कनि श्राण ॥

- 175 कनि श्राण कोरयेय मे त पिलवाजे ।  
लोकचे माजे लोल बोरयेय ॥
- 176 तनि मलोयेय गूह, कोश त ओटुय ।  
सअचि आव पश्मीन पोटुय हेथ ॥
- 177 वल मालि सूचो खसु सानि हेरे ।  
वरदन जोरे प्रारान छिय ॥
- 178 सूचन अनीय पअरिथ अतलास जाम्मय ।  
सूचस क्याह पजि येनामय ॥
- 179 माम जूवन अनिनय जाम जूरि पारिथ ।  
शाम सोन्दरी शान रोज़ दअरिथ ॥
- 180 सेरि रस वान्नि सअति तन छलययेयि ।  
अद हावययेय अग्नय कोण्ड ॥
- 181 कनि श्राण करिथ गोरस चायखय ।  
आयिखय इन्दो करने किच ॥
- 182 महाराज सअबुन गुर गण्ड बागस ।  
बड़ि ब्रह्मण लाग दातस द्योक ॥
- 183 द्योक प्रजोलुयि डेक वोजोलुयि ।  
मोललुयि गन्दुस कअंकनि बन्ध ॥

- 184 डेकस टेकिस कअंकनि बन्धस ।  
मोजय वन्दुस चन्दन तन ॥
- 185 पननिस बब सअन्जि गजख तीरी ।  
पीरि पेठ करयेय कन्य संसकार ॥
- 186 थाल टूर ओनमय गोजे वारे ।  
डेजहूर ओनमुय वेजिब्रारे ।
- 187 बबन द्युतुयि थाल टूर गोरन मन्सोक्य ।  
कूरेय करयेय कन्य संसकार ॥
- 188 आयसतानस कोरमय साये ।  
वुनिकेन पजनय वायन वअलि ॥
- 189 दअंतन सअति सुम कडयोय ।  
रुम गन्डयोय नअरिवन सअति ॥
- 190 दिवतगुलि वअटिथय वरि तय हन्दे ।  
गरि वटिन हरि चन्द्रराजने ॥
- 191 माजि भवानी लोदुय प्रअप्यअनुय ।  
लअर ब्योल तय छतरय हार ॥
- 192 हावसि प्रअप्युन चोटुयि थावुस ।  
त्रावुस गौसअ तय बोजुस वीद ॥

- 193 बबन पननि दियुतुयै नालय चोटये ।  
शारिकायि कोरनस अथरोटुयि ॥
- 194 डुंग दिय सअदरस, लाल खारि बोठुयि ।  
कूरेय कर्म-लोन चोन पोठुये द्राव ॥
- 195 क्याजि छेक गमगीन राम-राम मोठुये ।  
कूरि कर्म-लोन चोन पोठुये द्राव ॥
- 196 मअजि पअरि लजियो कुकिलि-हटिस ।  
विगिनि चोटिस प्रारान छिय ॥
- 197 यजमन बाय करान आये त पाये ।  
जानावर बीठिस जाये पेठ ॥
- 198 हशि नोशि अछय रखय ।  
दिवगोनस खअचयि प्रअप्युन हेथ ॥
- 199 यकलय पेठची कुकिले हअरी ।  
सन्यवअरी त्राव पअत्रय चाल ॥
- 200 दिवगोन मोकलअविथ अथि फोल रटिव मालि  
खेयिव मालि पादशाह बागचि दछ ॥



## (दिवत गूलि)

- 201 दिवत गूलि वटिथय वरि तय हन्दे ।  
घरि वटिथ हरि चन्द्रराज्जने ॥
- 202 नेमिथ वटिथय दिवतय गूलि ।  
समिथ वसवय यारय बल ॥
- 203 दिवत गूलेन थाल चोनूथयि ।  
लाल ज़ोवुयि रंग बअलिये ॥
- 204 दिवत गूलि वअलिथय बड़ि दरवाज्जय ।  
राज्जय गणीश सअत्य सूत्यती ह्येथ ॥
- 205 दिवतय गूलेन सअति सअति शमाह ।  
बोंठ-बोंठ ब्रह्मा वीद परान ॥
- 206 अर्ग बरिथ तरंगहन, सेन्दरि बरिथ पूचिहन ।  
इन्द्र सअन्जि नोश वअछ यारय बल ॥
- 207 दिवतय गूलेन अलुन त वलुन ।  
फोलुन त प्रेसेर लअगिनव ॥
- 208 वेतस्ता मोजी छेमय चअनि लादन ।  
ब आयेस चानेन पादन तल ॥

- 209 खोरन लअजिथय पुलहअरि-दानी ।  
रअनि वअछ यारबल पोनि चटने ॥
- 210 चोट त्राव कोलि तय लव दिय खोरन ।  
दौरन खअचखयि होदशीश ह्मेथ ॥
- 211 वेतस्ता मोजी बोछि हय लजिम ।  
कोछिं लाल दितम घर गछहा ॥
- 212 जून खअच ढबे असि वअति पनने लबे तल ।  
जून खअच यजमन सन्जे ढबे असि वअति  
पनने लबे तल ॥



(.....)  
मस पारनस वनवुन  
(.....)

- 213 कंधन्या अन्निमय छानय वानय ।  
मोक्तय दानय जरअसे ॥
- 214 गछित अनिनय बबन पननि-पानय ।  
बोय पनुन ब्यूठुयि सोनरि-वान ॥
- 215 सोनरयो सोन जरुस खान ब खानय ।  
मोक्तय दानय जरअसे ॥

- 216 सोन सअन्जि कंघने जठ वालय ।  
अठ पारय फलिल सअति ॥
- 217 जठ वालमय रूमय-रूमय ।  
छेखय मोसूमयि खोन्नि ललवथ ॥
- 218 जअविलेन रूमन सुम सेज द्रायी ।  
शारिका आई वअँकअ पारने ॥
- 219 कूरि पारयेय पअटिव वअँकय ।  
गाटजि कूर गछि वअरिवुयि ॥
- 220 वअँक पारयेय फलिल त हिये ।  
यूरि हय यियि चोन अर्जन दीव ॥
- 221 कूरि पारयेय बादाम वअँकय ।  
आदन कूर गछि वअरिवुयि ॥
- 222 कूरि पारयेय खँजर वअँकय ।  
पँजर हूर गछि वअरिवुयि ॥
- 223 निचि-निचि जालि वँअक पअटिपन पारयेय ।  
तारयेय लोहवरियुक बुहरी साज ॥
- 224 बबस त माजि हुन्द पत पत सारयय ।  
रोगनी कुलिच त कम कम नाज ॥

- 225 बअडि-दोह लोकि दोह वारिव चानि गारयेय ।  
तारयेय लोहवरियुक बुहरी साज् ॥
- 226 सोमन कपसा ववनय आये ।  
सानि माहशेनि हन्जि यछाये ॥
- 227 वासदीव राजनेन डारन द्राये ।  
चूर दिनि आये गअसि-बाये ॥
- 228 शबनम लवि सअति फलित आये ।  
सानि माहरेनि हन्जि यछाये ॥



(तरँगअ गँडनस वनवुन)

- 229 माँसव कोतुयि तोमस फोतुयि ।  
पोफव कोतुयि कलाबोत ॥
- 230 रथि वोथ तोस तय अथि व्यसनोवमय ।  
तथि करनोवमय तरँगहन ॥
- 231 अअठ गज् तरगँ शेठ गज् तोर छुयि ।  
तमि कुयि ज़र शोल दिवान ॥
- 232 येति गयस वोवरिवान अथि हेथ प्रचिहन ।  
तअथि ओनुम पलदार तरँग हन ॥



- 233 तरँग ओनमय गाह लोग त्रावने ।  
ताह कोस्स माजि रअग्न्याये ॥
- 234 मअज भवअनि आयि हेथ मन्जि भवसरिये ।  
अथस केथ ज़रिये तरँग हेथ ॥
- 235 तरँगस चअन्निस दछिन पोछये ।  
यछिथ सूजुयि माजि भवआनी ॥
- 236 तरँगस चअन्निस सोन सअन्ज टेकय ।  
डेकय बअड़ये नीरीजेम ॥
- 237 तरँगस चअन्निस सोन कलाये ।  
दूर बलाये गअछिनय ॥
- 238 धोबि ओनुयि मायि दार वोवुरि ओनुयि तारे दार  
भरुत्तावार कूरी गन्डि तरँग हन ॥
- 239 तरँगस जअरिमय अरतलि वथर ।  
शत्र पेयी पादन तल ॥
- 240 जूजा अनिमय वोवुरि वानय ।  
वोवुर योत आव पानय हेथ ॥
- 241 जोजे चाने सोन जरनोवमय ।  
घरि वननोवमय अन्द वअतिनय ॥



## कोरि लग्नस वनवुन

- 242 वुशकू द्रायि हेलि तय दात्रि लोग पूरे ।  
दूरयुक येनिवोल कर वाते ॥
- 243 पूरे कने खोतखो सिरियो ।  
पश्चिम कुनुयि जअचयि त्राव ॥
- 244 कोह तल सिरियो द्राखो नोनयि ।  
ब्रह्मा कुनुयि सूजमय ॥
- 245 पूरे कन्ये नबि कोर वोदय ।  
दरे सोनसुन्द बोदय आव ॥
- 246 शेन्क शब्द बूजमय वेथि अपारे ।  
गोंद प्रजनोवमय वेजिब्रारे ॥
- 247 खनबल सोदागार वथिये नावे ।  
मोत्तय दावे मोल करने ॥
- 248 तल छुयि मसनन्द पत छुयि तकिये ।  
सखिये सोसि आयि इखि नावनय ॥
- 249 नाव पेचि रथि तय नाव पेचि वारय ।  
नाव पेचि कदलय तार दिवान ॥

- 250 हँअजव कोरहय द्रोब वायोनुय ।  
होवहय वोमायि हुन्द जायोनुय ॥
- 251 सोन सअन्जि नावे रोप सुन्द हम छुयि ।  
नम रट गणपत सअबुन कुन ॥
- 252 वेथ बलि आहम वेथ वोन छपनयि ।  
होहवअरि दपनय शाहजाद आव ॥
- 253 कन कड़ कनवाजि लाय असमानस ।  
खूम दिव रूम किस मअदानस ॥
- 254 डायि सास लुख आयि पोश वेमानस ।  
छुखय दामानस मोक्तय दोव ॥
- 255 आव माहराज तय पोक मअदअनी ।  
खोत असमअनी गरदि गुबार ॥
- 256 ज़रबाफ वयुरमय वते-वते ।  
कामदीव शाम सूरते आव ॥
- 257 ज़रबाफ वथुरमय दोरे-दोरे ।  
प्यठय बानचे कोरे आव ॥
- 258 समन्दरस सोथ द्युत चन्दन लते ।  
शेव नाथ स्रन्दे वते आव ॥

- 259 समन्दरस सोथ दियुत क्रम ओतारी ।  
राम जू रथ सवारी आव ॥
- 260 राजपोत्र शूरवान शूभिनय खोरन ।  
गाह प्योव दारेन त दरवाजून ॥
- 261 छतरस चअनिस मोक्तव ज़ोलुयि ।  
इन्द्राजून येतिवोलुयि आव ॥
- 262 हसित्येन चानेन सोन अम्बारी ।  
प्रिछितोस कमि शहअरी आव ॥
- 263 शब रोज़ वुछमय तारख खसान ।  
वनतो घर कति आसान छुयि ॥
- 264 घरि पननि वुछमख मोटरस खसान ।  
होहवुरि वुछमख बोन वसान ॥
- 265 हशि पननि वुछनख सिरिय ज़न खसान ।  
वनतो घर कति आसान छुयि ॥
- 266 सोनअ दस्तारस मोक्त जरययो ।  
येथ घर वथ कम्यू हअवयो ॥
- 267 ओर आव यजमन सुन्द येनिवोलुयि ।  
बंगअलि नावन त पोश परदन ॥

- 268 योर द्रास कोरि मोल सोन सोवुयि ।  
येथ घर वथ कमि हअवयो ॥
- 269 तेलि कोनअ आयाख येथ बाजारस ।  
येलि असि सोन ओस दस्तारस ॥
- 270 बब पनुन द्रावुयि प्रथ बाजारस ।  
कोरि हुन्द लोन कुनि मेलेमना ॥
- 271 युथ लाल छु मेलान खाल कुनि शहरस ।  
येलि असि सोन ओस दस्तारस ॥
- 272 मत वुछि तअ सअन्निस दुंगडुलालस ।  
वुछितव अजिकिस हालस कुन ॥
- 273 युथ अअसि करान वोहरवअदि सालस ।  
येलि असि सोन ओस दस्तारस ॥
- 274 आव महाराज तय पोक दम-दमय ।  
कुलेन पन प्योव जम-जमय ॥
- 275 अडि आयि वोखलि तय अडि आयि नावन ।  
हावस गीर आयि खावन पेठ ॥
- 276 बागस सअन्निस गुल गअयि ताजय ।  
सोन-कोरि मोक्त महाराज हय आव ॥

- 277 दक्ष-प्रजापतनी कूरि कोमारी ।  
त्रोभवन ओयय ओंब्रअरिये ॥
- 278 कूरेय लोन चोन कोरमय सही ।  
साक्षात महीश्वर हय आव ॥
- 279 मौजि छेयि करान नही-नही ।  
बबन कोरनय सही कार ॥
- 280 कअसि नायि अथि आयि लानिन्न बही ।  
साक्षात महीश्वर हय आव ॥
- 281 वुछमय न जातकस प्रिछमय न क्रअन्निस ।  
कूरेय लअन्निस नमस्कार ॥
- 282 प्रिछमय न मातामालकिस क्रअनिस ।  
जेरि अकि लोन गोव जोरावार ॥
- 283 कूर नेरि डेक-बअड़ शूभ यियि क्रअनिस ।  
कूरेय लअनिस नमस्कार ॥
- 284 कोरि-वोल सोन क्याह-क्याह लोग सोरने ।  
येनिवोल वोतुस बरने तल ॥
- 285 दशरथ राजअ आव कश तीर त्रावान ।  
कौशेल्या माता छि वत शेरान ॥

- 286 आव महाराज तय चाव बजि दोरे ।  
मोत्कुव छत्र छुस लोरे पेठ ॥
- 287 आखा मालि वासदीव राजनि कोरे ।  
बेनि आख कृष्ण जूवने ॥
- 288 अमीर तय अशराफ मारान जोरे ।  
मोत्कुव छत्र छुस लोरे पेठ ॥
- 289 आव महाराज तय चाव बजि बरने ।  
पाट-पूथि वअलितोस परने किछ ॥
- 290 चारखो मालि वासदीव राजनि बरने ।  
गोबुर छुखो दशरथ राजुनयि ॥
- 291 ज़नक राजनि कोरि आख वरने ।  
पाट-पूथि वअलितोस परने किछ ॥
- 292 आँगन चारखा मालि लग्नकि हीतय ।  
भूतन दियिव मालि रतय छेपि ॥
- 293 वअरिविच पोंपुर येलि ह्योर खसि ।  
अद वसि रामस निश सीता ॥
- 294 ओर आव नाराण असि लोग शेरे ।  
नेरूसे नरि पान आलोसे ॥

- 295 व्यूग छुयि लीखित सोमि-सोमि जाये ।  
शाये कृष्ण जूवने ॥
- 296 ओरय ओई साहिब दौलत ।  
योरय नेरुस आलथ हेथ ॥
- 297 रत्नय सरस दिचथम डालै ।  
रत्नय चअँगिस आलोसे ॥
- 298 वुदअ ज़ोलोयो माजि ज़ालाये ।  
नाबद आपरुयि मीनाये ॥
- 299 सोन्नि-सोन्नि बीठिवो मन्ज पुशवारे ।  
सन्ज लोग हारि तय बुलबुलस ॥
- 300 सोन्नि च़ाव आँगन सोन सन्ज वतय ।  
सोन्निस ति मोकल्योव अतयगत ॥
- 301 सोन्नि च़ाव आँगन जागिर गामन ।  
जामन वुछितोस ज़ेबअई ॥
- 302 सोन्नि च़ाव आँगन वथरोस पेन्जे ।  
लन्जि सान ज़ाफल बदलअवितोस ॥
- 303 सोन्नि मोल गोबरो सोन्नि चअनि किवये ।  
सोन्निस ति सोन वाजि मअनिये क़अक ॥



- 304 सिरीय आव सतन हसित्येन खसिथ ।  
वसिथ कअरितोस दारय पूज्ज ॥
- 305 हिये फोजिखयि वोगन्येन बालन ।  
पुश वअजिखयि पोशमालन सअति ॥
- 306 कूरेयि खअचखयि तुलिमुलि नालन ।  
बब छुयि मालन चूनि जरान ॥
- 307 माम छुयि दपान बुयि कोछि वालन ।  
पुश वअजिखयि पोशमालन सअति ॥
- 308 द्वार-पूज्ज करु मालि व्यश कुमारे ।  
वार-पूज्ज करु मालि सालिग्रामस ॥
- 309 पोश पूज्ज करु मालि दारि त हँगस ।  
अअलि त रोंगस द्वारय पूज्ज ॥
- 310 हारि कर द्वार पूज्ज सअति अलल खानस ।  
भुमि कमानस सेन्दरे द्योक ॥
- 311 मोक्त चव डेलस तरव्वतअ खानस ।  
द्योक लाग पादशाह देवानस ॥
- 312 त्रे-लर बब सन्जि त्रे-लर हेहरस ।  
शु-लोर योन्या प्रोवयो ॥

- 313 पोश रठ दअछिनि योनि फिर खोवअरि ।  
होवरि हँगस पूजा कर ॥
- 314 योन्नेस, टेकिस त कअँकनि बंधस ।  
मोजय वन्दुस चन्दन तन ॥
- 315 ओर आयि सतऋष, योर द्रायि पाण्डव ।  
खसिव मालि मण्डुल छुव वाहरअविथ ॥
- 316 अनु मालि पुशोव बबरे लोवुयि ।  
सोव खसि हेरे त वथरअवितोस ॥
- 317 नन्दन्यो आहम लग्नस पअनी ।  
चन्दनुव खारयो जअनी हेर ॥
- 318 धर्म हेरि खोतरखो भ्रम दिथ छाये ।  
छाँडान कर्म-लीखाये आख ॥
- 319 सोठकह हेरि खोतरखो पठकह दिथ छाये ।  
छाँडान ईश्वर मायाये ॥
- 320 हेरि छेयि सेन्दर हेर दअँतुवुयि ।  
हेरि छु खसान देवादेव ॥
- 321 दिदरि छि बोलान प्रातः कालस ।  
असि मसनन्द कोर लालस कियुत ॥

- 322 मारपेच हुकय कअलनि बरदार ।  
यिमय सरदार बीठि दरिचेन पेठ ॥
- 323 काकन हँअजि काकय हअरी ।  
वअरिव चअन्नि बीठि ताकन पेठ ॥
- 324 बबन हँअजि बबथ हअरी ।  
वअरिव चअन्नि बीठि गबन पेठ ॥
- 325 रंगरेव अमियि पअटि रंगनअविथ ।  
अड़ि किरिमज तय गुलि अनअरि ॥
- 326 सतरन्जि छोचि तय कअलीन जीठी ।  
बागस बीठी सोदागर ॥
- 327 तल फम्ब फोत तय पेठ डुरे खासा ।  
सभि वथरअवित्तव अतलासा ॥
- 328 छोन्न गोयि रोन्नेन तय रोप जंगोलन ।  
वथरयि पादशाह बन्गलन पेठ ॥
- 329 छहमयि बबस त माजि हँज वजीर ।  
वथरयि खजर कुलिनयि तल ॥
- 330 छहमयि बबस त माजि हँज आदन ।  
वथरीय बादाम कुलिनयि तल ॥

- 331 असि क्या तोहि कियुत रोनुत आसे ।  
हअँजनि दोग दितअ सोख दासे ॥
- 332 असि मालि रोनुवो सरतील बानन ।  
तोहि लेल बानन जियाफत ॥
- 333 खासन कियुत रोनु भासमति पोलाव ।  
मेत्रन किच रन्नि छतरय हार ॥
- 334 वअँकय लन्जेन मोक्त जरैयोय ।  
क्रेजँन भासमत फीरैयेय ॥
- 335 असि रअछि कूरा तप करि-करियैय ।  
भत-थाल शीरिज्येव बरि बरियैय ॥
- 336 थालन भत त खासेन दाल छव ।  
साल छुवो कोरि हन्दि मालिने ॥
- 337 बागकि ओलव इलकि नदरी ।  
दिदरी बब छियि सभ हारान ॥
- 338 नीरि वोल वोपल हाक चीरि लोग पाकस ।  
रव्येयिव मालि भतन्हान हाकस सअति ॥
- 339 असि कअर तोहि किच कोंग तरकअरी ।  
रव्येयिव मालि रोंग चअरि-चअरिये ॥

- 340 असि कअर तोहि किच अअल तरकअरी ।  
मअल सान ख्येयिव मालि चअरि-चअरी ॥
- 341 दाला-भता, नदरि मिसकाला ।  
ऋषेण हुन्द साला छुव गनीमत ॥
- 342 बाग मन्जु लीसअ अन्नि रअमि संभाये ।  
चम्बा-नाथनि येछाये ॥
- 343 हर गुपालस वकील सरदारस ।  
राजस कति आथि दिवता बोद्ध ॥
- 344 बानहालि पेठ आव चम्बा नाथ तरिथ ।  
दालि हुन्द इन्तिजाम करिथ द्राव ॥
- 345 ऋषे कन्यकन हुन्द कोरुन वोपाये ।  
चम्बा नाथनि येछाये ॥
- 346 आनन्द कौलन कअड़ चामन क्राये ।  
सिरी कौलन दोपुस छाये थव ॥
- 347 मलखाह मन्जुय कुननय आये ।  
चम्बा नाथनि येछाये ॥
- 348 वासदीव राजनि सोदय ब्रायो ।  
दोद बुरानि वुछ साद क्या छुस ॥

- 349 असि कअर राजन सअति बन्ध-दारी ।  
वाज्जन सअति फीर भवानी ॥
- 350 कृष्ण जी भायो रस फिर नारे ।  
वातनाव हारे हन्देन वअरिवेन ॥
- 351 दोसि पेठ कअरमय पोशि लन्जि मिलवन ।  
त्रेशि कनि दियुतमय अमृत चोन ॥
- 352 रअयि चअनि वोदनी त ब्अयि चअनि गन्दरी ।  
सोन्दरी बब छिय सभ होरान ॥
- 353 अथ छलुन द्युतमय अमृत वोनी ।  
तुजि करिन दिचमय चन्दन लूश ॥
- 354 वअँगिस खोत छय पोंपर जीठयि ।  
लग्नस बीठयि चेन्तामन ॥
- 355 कूरेय बीठखय लग्न किस थानस ।  
करि भगवानस नमस्कार ॥
- 356 खस अग्न मण्डलिस बेह सरस्वतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 357 कैलास कोहकि यिमय सूरमतिये ।  
वोलास गअण्डि गअण्डि आँगन चायि ॥

- 358 आकाश वअथि किन पाताल खअतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 359 महाराज आयाव ताक दारि पतिये ।  
गुरेन छिय गौंदि तय शुरेन गअजगाह ॥
- 360 असि गअयि हुशार शेन्ख शब्द सअतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 361 वीगिस खअचखय मोज पारवतिये ।  
शेरस सअति रोजि बराबर ॥
- 362 नाबद आपुरयि मीनावतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 363 द्वारपूजि खअचखय मोज भगवतिये ।  
वारअ रोज नख छुयि पान भगवान ॥
- 364 चन्दनकिस द्वारस सेन्दरि टेकि खतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 365 खसवुन तेल वोहरुयि गोर हेतिये ।  
तमि सअति असुरन वसि अंधकार ॥
- 366 लसि महाराज सोन यियि ब्रूठि-पतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥

- 367 लग्नस बीठखय मोज पारवतिये ।  
अग्नस कुन रोज अथ दअरिथ ॥
- 368 अग्नकि रअति फल तोहि दोन कितिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 369 पारन डूनि रअटि मोज पारवतिये ।  
कारण बूज्य-बूज्य हलमा दार ॥
- 370 हशि तय हेहरस नीरिनय हेतिये ।  
लतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 371 नाव मालि कअरिजेस श्री सरस्पतिये ।  
भाव मालि कअरिजेस छय संसार ॥
- 372 नोशि कनि वअचयि साक्षात सतिये ।  
सतिये वोतुयि वेवाह कार ॥
- 373 सुलि वोथि पुशनेय विलि खयि बालस ।  
लालस किच वाल मन्दन-माल ॥
- 374 पुशनय खअचखय अमरनाथ नालस ।  
नति छिय फअलिमित नाना-रंग पोश ॥
- 375 अडि भरि जनथरि अडि भरि नालस ।  
लालस किच वाल मन्दन-माल ॥



- 376 मन्दन-मालि चानि सुखि जरैयो ।  
रखि आपरोयो नाबद हन ॥
- 377 मन्दन मालि चानि लाल जरैयो ।  
साल छेखय पननिस बेम-सअबनि ॥
- 378 मन्दन-मालि चानि रोन्नि जरैयो  
बेनि छेखय पननिस भअइसअबनि ॥
- 379 मन्दन-मालि चानि दूर जरैयो ।  
कूर छेखय पननिस बब-सअबनि ॥
- 380 मन्दन-मालि गण्डुस केसर-दस्तारस ।  
थदि कुठे वथरुस सबजारस ॥
- 381 मन्दन-मालि चानि सोन सअन्ज टेकै ।  
डेकै बअडयि नीरिजेम ॥
- 382 मन्दन-माल गण्डयो सोभद्राये ।  
अर्जनदीवनि भअययि ॥
- 383 मन्दन-मालि चाने जणि कुस ओयो ।  
मगँला दीवी त नन्दकीश्वर ॥
- 384 सोमन कुमार मालि काछि हेचयि ।  
तचयि मोहरा नेशवान ॥

- 385 कूर छेयि कोछि तय पुस्तक परान ।  
महाराज छुसय अथ दारान ॥
- 386 कन्य-दान कोरयो मालि दशरावनो ।  
भूमि-दान रोटथो मालि ब्रह्मणो ॥
- 387 थदि कुठे थवमय दुर्गा नाविथ ।  
न्यून ब्रह्मण प्रति पालिथ क्या ॥
- 388 शरिका आँगन थअवमय वातनअविय ।  
तति रोज अथ जय दअरिथ क्या ॥
- 389 खिर-हनि खण्ड-हनि प्रअप्चुन हअविथ ।  
न्यून ब्रह्मण प्रति पालिथ क्या ॥
- 390 थालचि ठिव-ठिव बोलाकि वादा ।  
राधा-कृष्ण जू दान हेनि आव ॥
- 391 युस करि माघ श्राण नेथ पूजि सालिग्राम ।  
सुवि करि सत वुहुर कन्या-दान ॥
- 392 युस दियि माघ मअसि काँगर शिशरस ।  
ईश्वरस निश वाति राज-कुमार ॥
- 393 वेथि हुन्द यावुन हार तय श्रावुन ।  
कोरि हुन्द यावुन बब तय मोज ॥

- 394 रूजिथ गअण्डमय धर्ब डेटौनुय ।  
बूजिथ ईशर सोनयि आव ॥
- 395 नीलय वटस खोर चोनथय ।  
गोर जोनथय परमीश्वर ॥
- 396 कूरि कोमअरी माम जू डखि छुयि ।  
नखि छुयि चोतुर भोज नारायण ॥
- 397 युस बोय रोछथन नखस त कोछे ।  
सुयि बोय खोतयेम लाये बोय ॥
- 398 योस बेनि रअछथन नखस त कोछे ।  
सोयि बेनि खअचयेय गंगय वेस ॥
- 399 लाय बायि लायो लाय छख दोछे ।  
जमना बेनि गछि वारिवय ॥
- 400 गंग वेस जंगि आयि हेथ गङ्ग वोन्नी  
लायि बोय सोन छुयि जायोनुय ॥
- 401 येति दिजि कोङ्ग मोण्ड तति नाय तअछिजे ।  
कूर नायि रअछिजेन लुक हुन्द माल ॥
- 402 लग्न छी करान कअनी अन्दरी ।  
सोन्दरी रअूफ चोन सिरियस प्रव ॥

- 403 लग्न छी नवि लरि ताकस ।  
बोलाय ग्राकस नसत-वाजे ॥
- 404 हअर छेय दपान यि छि म्यअनि बूली ।  
शब्द बूजुयि पोश-नूलिये ॥
- 405 लोहूरि तोतो कश्मीर हअरी ।  
तोहि दोन कति गयि पअरीजान ॥
- 406 दिमयेय कूरि रत्न त दाजे ।  
फेरि कूरि वाजि अथ-वास करिथ ॥
- 407 युथ कूरि रअछिनख पनन्ने माजे ।  
त्युथ नायि हेकिये काँह ति रछिथ ॥
- 408 चेनि हय दिचनय शेयिन्निह नाजे ।  
फेरि कूरि वाजि अथ-वास करिथ ॥
- 409 युथ कूरि रअछखय मासि पोफि माजे ।  
त्युथ नायि हेकिये काँह ति रछिथ ॥
- 410 खेन्नि दितिनय खंड खअसि चेन्नि दोद पाजे ।  
फेरि कूरि वाजि अथ वास करिथ ॥
- 411 अथवास करान अथ रठ चीरय ।  
कथ कर सीरय बोजिस सअति ॥

- 412 आकाश ब्रअरी कूँश लागि खोरन ।  
पोदिच दिय हेहर सअन्देन मोहरन पेठ ॥
- 413 सतवयि मोहरव पेठि पकनअवमख ।  
वअरिविक गुथरय तारनअवमख ॥
- 414 आईन हअविथ रूप छिये रअतिये ।  
अग्नन दितुये शीतल सोभाव ॥
- 415 हाथी पोरअचि चअँदि अननअवमय ।  
तअथि गरनोवमय दय-भत थाल ॥
- 416 दय भत थालस सोन सअन्दि खूरी ।  
कूरी खारयेय दय-भत थाल ॥
- 417 वुरबल वअनितव लोकटिस वाजस ।  
राजस खारिहे दय-भत थाल ॥
- 418 दय-भत खोरमय चरकी थालस ।  
सोदगुलालस मधुमति कियुत ॥
- 419 गोरि हअन्दि अनितव दोद चोड़वअरिय ।  
सोरुय दामा चेतमो ॥
- 420 त्रेथि कनि दियुतमय अमृत वोन्नी ।  
तुजि करनि दिचमय चन्दन लिश ॥

421 माजि हअन्जि बबि तल चो-थय वुगवोन्नी ।  
राज घर गछखय मगँलअनिये ॥

422 यान्न कूरि गोरनय दारि मन्जोलयि ।  
तान्न कूरि वअरिव्युक चोलुयि आव ॥

◆◆◆◆◆◆

## (पोश-पूजा)

423 ॐ कर श्लोक पर श्री गणेशाये ।  
पोश पूजाये वेल हय वोथ ॥

424 येति पेठ गअयसय माजि रअग्न्याये ।  
प्रतिक्षण दिमस भावनाये सान ॥

425 भूतीश्वर वोल्मुत्त तअसन्जे माये ।  
पोश पूजाये वेल हय वोथ ॥

426 मोक्त कनि तारव छिमय तापदानस ।  
छेमय ईशानस पोश पूजा ॥

427 डेक्स पेठ चंद्रम तस तीजवानस ।  
बुथिस छुस करोर सिरियुक रूप ॥

- 428 છેસ દયા ગુલિ ગણિત તસ દયાવાનસ ।  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥
- 429 આકાશ પોશ વર્ષુણ હનિ-હનિ છુસ ।  
રથબાન કનિ છુસ સિરી દીવતા ॥
- 430 સાયબાન દિયુતમુત છુસ અસમાનસ ।  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥
- 431 લાલન હુન્દયિ મોત્તહાર નઅલિ છુસ ।  
વાવ લૂકપાલ કરાન ગઅજિ-ગાહ ॥
- 432 લક્ષ્મી મીઠી છેસ દિવાન દામાનસ ।  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥
- 433 સતજન સતત્રેષ સઅતિ છિસ પાનસ ।  
ચિત્રગુપ્ત છુસ ઠેલિ બરદાર ॥
- 434 ધર્મરાજ થોવનય પેઠ ધર્મ વાનસ ।  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥
- 435 ગંગા સાગર હેથ ગંગા છેસ ।  
વુદઅ જાલાન છેસ કર્મલીઆ ॥
- 436 ઘટ ચઅજિ ત ગાશ આવ સઅરિસિયિ જહાનસ  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥

- 437 જનિંગ તાલ અનસ અષ્ટસેદા છેસ ।  
વ્યૂગ લેશ્વાન છેસ મહા વેદ્યા ॥
- 438 રથ છિરવ ગઅણિડમતિ મન્જ મઅદાનસ ।  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥
- 439 ઈન્દ્ર-લૂક દીવ લૂક સઅતિ છિસ પાનસ ।  
સોરુયિ સ્વર્ગય સ્વર્ગય દાર ॥
- 440 સરસ્વતી દોદ મોજ સઅતિ જંઅપાનસ ।  
છેમય ઈશાનસ પોશ પૂજા ॥



## (શંકર પૂજા)

- 441 ભાવ પમ્પોશ ફઅલિ પ્રેયમય સરસયિ ।  
શિવ શંકર સયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 442 ગૌડ આદિન્દીવસ જૈ જૈ કઅરી ।  
ગુડ દિસ છેસ અનવઅરી બ્રોંઠ ॥
- ગણિશ-બલ જલ હિલિ મૂસલ દરસયિ ।  
લમ્બોદરસયિ છે પોશ પૂજા ॥



- 443 शिव ध्यान दारुन वीद वेस्तारुन ।  
 अमृत हारन कारण दीव ।  
 वैकुण्ठ सम्पुन्न सअनिस घरसयि ।  
 रामेश्वरसयि छे पोश पूजा ॥
- 444 सोयम गछिय प्रेयम बरसयि ।  
 काल नअगिन रूद्रस त भद्रकअली ।  
 पूज नेशकल कल माला दरसयि ।  
 हरीहरसयि छे पोश पूजा ॥
- 445 शेव-राग कारकूट नाग-पाठ परसयि ।  
 पापहरन नाग हरनम अपराध ।  
 भीमसीननि पाट सअति हरधरसयि ।  
 नागेश्वरसयि छे पोश पूजा ॥
- 446 नाग-नाग फेर कोत येथ भवसरसयि ।  
 नागेश्वरस लाग मन त प्राण ।  
 मन किस मन्दरस पूजा करसयि ।  
 श्री जटादरसयि छे पोश पूजा ॥
- 447 त्रेन हुन्द सन्ज कर नेथ वुथ दरसयि ।  
 त्रेनवनि भअविनख पादि प्रणाम ।  
 सोन्द ब्रारि वन्द पान शामन्तोन्दरसयि ।  
 तीर्थ पोशकरसयि छे पोश पूजा ॥

- 448 રિર, રવન્ડ, કન્દ સઅતિ થાલા ભરસયિ ।  
 પ્રેયમ સઅતિ આપરસ વન્દયો પાન ।  
 નીલ કણ્ઠસ ઢિગમ્બરસયિ ।  
 સર્પાદરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 449 નવદલ કલ વન્દ અમરીશ્વરસયિ ।  
 થઅજિવારિ કર શંકરસયિ પૂજ ।  
 ઢિમ વેજબ્રારિ પ્રકરમ ચકદરસયિ ।  
 વિજેશ્વરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 450 બાલ પેઠ તુતલાઈ તોતા કરસયિ ।  
 અનન્તનાગ કર માઘ માસય શ્રાણ ।  
 શ્રાપ ચલિ ઇન્દરસ ગોવ આશ્ચરસયિ ।  
 વેશમ્બરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 451 અર્ગ-પોશ બર્ગશેરવા પૂજા કરસયિ ।  
 મટન વઅત્તિથ હટન અપરાધ ।  
 મોક્ષ પેત્રન ગછિ ક્ષણમાતરસયિ ।  
 સિરી-ભાસ્કરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 452 બાલ પેઠ પ્રેયમ પોશ માલ હેથ તરસયિ ।  
 સતશાયિ ઉમાયિ પૂજાયિ લાગ ।  
 તથ નાગસ બ પ્રકરમ કરસયિ ।  
 ઉમાદરસયિ છે પોશ પૂજા ॥

- 453 કૂઠિહેર અન્દિ-અન્દિ ફેર તથ સરસયિ ।  
 કૂઠી તીર્થસ છુયિ મહિમા ।  
 આશ થવ શંકર શનનિસ વરસયિ ।  
 બ્રશભાદરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 454 દિવસ્થલિયે છેયિ દિવસરસયિ ।  
 સારિનયિ દિવયન છુ પાદિ પ્રણામ ।  
 વાસ્કનાગ શ્રાણ કર શમ પમ દરસયિ ।  
 સોયકુળ્લશ્વરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 455 કૃપાલ મૂચન ભક્તિ-ભાવ બરસયિ ।  
 પાપ ક્ષય ગછિય પરશ્રાપ મૂચન ।  
 પ્રાવરનિસ કૃપાલ માલા દરસયિ ।  
 ગઙ્ગધરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 456 અર્જનદીવનિસ યુદ્ધ યુદ્ધિષ્ઠરસયિ ।  
 રાજરેન્નિ માજિ રઅગ્ન્યાયિ કર પૂજા ।  
 ધૂપ-દીપ આલવસ ચ્યથ ચામરસયિ ।  
 ભૂતીશ્વરસયિ છે પોશ પૂજા ॥
- 457 પર્બત શારિકાયિ લીલા પરસયિ ।  
 આદિદીવ રછિમય બરસયિ તલ ।  
 કર બ પ્રકરમ ચકરીશ્વરસયિ ।  
 વામદીવશ્વરસયિ છે પોશ પૂજા ॥

458 रामराधन मन पूजा करसयि ।  
हरमोख प्रारस बरसयि तल ।  
भर्त बाल तरवात पेठ कोल सरसयि ।  
भस्मसधरसयि छे पोश पूजा ॥

459 अमरनाथकिस निश अमरसयि ।  
तीर्थ यात्रायि द्रायि हेथ पुण्य फल ।  
सर्व तीर्थन हुन्द फल छु कश्मरसयि ।  
मुक्तीश्वरसयि छे पोश पूजा ॥



भाव पम्पोश फलि प्रयमय सरसयि ।  
शिव शंकरसयि छे पोश पूजा ॥

460 वेसि दोप तेसि कुन पोश फअलि बागस ।  
थिमय खोश यिनमतय तिमय लागस ॥

461 परमीश्वरस तय माजि पारवतिये ।  
लागस पूजि लव हतिये पोश ॥

462 तुलमुल गछहा माजि भगवतिये ।  
रअग्न्यायि नावस जय-जय कार ॥

463 शेरि बो लागस पम्पोश फतिये ।

लागस पूजि लव हतिये पोश ॥



(कूर वअरिव नेरवुन वनवुन)

464 लग्न पेठ वअजिमख दानय दअजी ।

पोतरय मोजी नीरिजेम ॥

465 लग्न पेठ बअजिमख नूनय कनिये ।

वनि डेक प्रनिये नीरिजेम ॥

466 लग्न पेठ वअजिमख जय करवनिये ।

तय करवनिये नीरिजेम ॥

467 सानि कोरि हअल छेयि वजीर पकुन ।

गजूर टकुन थविजेस ॥

468 सानि कोरि हअल छेयि पादशाह पकुन ।

नाबद टकुन थविजेस ॥

469 दार मालि पोम्पर कोछि कोमार छेम ।

प्रार मालि कूर छेम नेशेवान ॥

- 470 हअर छेयि पन्जरस तोर कुस वालेस ।  
योर खसि तोतअ तय बोलिनावेस ॥
- 471 पोख्तअ लरि द्रायिखय मोख्तअ लरि चायिखय  
वरवत किन्न द्रायिखय भरक्तावार ॥
- 472 दारि किन्नि दिचनम रुमाल दारिथ ।  
अरिन्नि मन्ज नीयनम हीय चअरिथ ॥
- 473 व्यीगिस चअनिस शुराह गरय ।  
मन्जय मरेद भरअयो ॥
- 474 तोतो ब्यूठखो नीलिस द्रमणस ।  
हारि किछ थअविजेम नेमनस जायि ॥



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

## भाग - २

### नेच्चि खान्दर

#### महाराज नेरनस वनवुन

- 001 नअविदस नेन्द्र पेयि मसवलि बागस ।  
आगस दअपितव वुज्जनावेस ॥
- 002 वोस्तकार पकान वारय-वारय ।  
वअनितोस कमि शहारश आव ॥
- 003 मस कासनस जन्ग अनोसे ।  
नून-वरिहन तय मोहरा प्रास ॥
- 004 वोस्तकार दपान क्या कर वरिहनि ।  
मैं गछेम लरि हनि चूरिम पोर ॥
- 005 वोस्तकार दपान क्या कर नूनस ।  
मैं गछेम लरि हनि जूनय डब

006 वोस्तकार दपान क्या कर तोमलस ।  
मैं गछेम शुमल त जोरे शाल ॥

007 वोस्तय कारो खूर टठ वारय ।  
दाग पेठ वालय फम्ब-दस्तार ॥

008 वोस्तकार बायो अस्त-अस्त करुसो ।  
छागिग जुरसो मोरुस्तय हार ॥

009 खूरिस चअनिस सोन्ज तारय ।  
ध्यारय हलमा भरययो ॥



पलव लागनस वनवुन

010 असवनि नीलकण्ठ सिरी भगवानो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥

011 महाराज सअबुन होस मँगनोवमय ।  
हअसितिस सोन साज करनोवमय ॥

012 तथ पेठ महाराज पानअ बेछामो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥



- 013 तुलमुलि जग लोग ब्रग आयि सअरी ।  
लोल चानि तीर लगि त्रावअनी ॥
- 014 तीर सोम्बरनि लअगि दिवता पानय ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥
- 015 हरि हनि सअती बाग खन्यामो ।  
वारि हनि सअति दियुतमस सग ॥
- 016 चेर त बादाम खसिथ आमो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥
- 017 इम्ब यलि लोगहम चति लेल बानो ।  
मगँ लअजि चेरन त गोर्दालेन ॥
- 018 बागुक बागवान इअलि हेथ आमो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥
- 019 महाराज सअबनि वोथ फराश खानो ।  
रंग डूंगन कोरुन प्रंग वथरुन ॥
- 020 सुलि सूज लअलि कियुत अअन जंअपानो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥
- 021 सअदर मन्ज खोरमय लअदर दुरदानो ।  
मोल छुस गोब तय तुल छुस लोत ॥

- 022 सोनमालि मन्जबाग छुयि शूभानो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥
- 023 तोतो हारि वअनिजि कनतअलि पानो ।  
जअम सअति कअम छेयि आदि अँथस ॥
- 024 जअम गछि जअम ब्रान्द रोनि दामानो ।  
रोप तनि गण्डयो सोन जामय ॥
- 025 गण्डु डेटोनअयि खसु दरबारस ।  
गछु सरकारस खलथ मँगने ॥
- 026 खलथ छाँड़नि द्राव हअकिम निशे ।  
ब्रह्मा, वेष्ण त महेश्वर ॥
- 027 खलथा ओनमय जअनय कदलय ।  
अदलयि महाराज सअबुनयि ॥
- 028 खलथा ओनमय अअदी-अअदी ।  
सोरुयि जानाबअदिये ॥
- 029 सोमन कपसा ववतयि आये ।  
कृष्ण महाराजनि यछाये ॥
- 030 वासदीव राजनेन डारन द्राये ।  
चूर दिनि आये ग्रअसि बाये ॥

- 031 शबनम लवि सअति फलिथ आये ।  
कृष्ण महाराजनि यछाये ॥
- 032 मांसव व्येसनुयि तोस फोतुयि ।  
पोफव कोतुयि कलाबोत ॥
- 033 रथि वोथ तोस तय अथि व्येसनोवमय ।  
तथि करनोवमय दस्तारहन ॥
- 034 येति गअयेस वोवरिवान अथि हेथ प्रचिहन ।  
तथि करनोवमय दस्तारहन ॥
- 035 मअजि भवअनि आयि हेथ मन्जि भवसरियो ।  
अथस केथ ज़रिये दस्तार हेथ ॥
- 036 दस्तार ओनमय गाह त्रावोनुयि ।  
ताह कोरुम माजि शारिकाये ॥
- 037 सोन दस्तारस दछिनि ओयि पोछुये ।  
येछिय सूजूयि माजि भवअनी ॥
- 038 दाय कअमि दियुतयो विश्वामित्री ।  
पेत्री गोण्डयो सोन दस्तार ॥
- 039 दस्तार गण्डनस जन्गि कुस ओयो ।  
मँगला दीवी त नन्दकीश्वर ॥

- 040 व्यीगिचि जायि व्यस्तार लिवयो ।  
अवतार कृष्ण जुवने ॥
- 041 कलमुक मीलि-प्योर प्योयो मालि वरकस ।  
राज ब्यूठ रवकस व्यूग लेखान ॥
- 042 कलमदानस दवात तअचयि ।  
कअचयि गुमाशत छि व्यूग लेखान ॥
- 043 अछ रछ बेनि ल्यूरव कछकर व्यूगुयि ।  
राजिरेनि माजि थव व्यीगिस प्रास ॥
- 044 व्यूग लेखोयो सते रंगे ।  
कन्यक जन्गे अनोसे ॥
- 045 व्यीगिस कअरिमय शुराह घरय ।  
मन्जे मरेद बरीयो ॥
- 046 ब्रांदस वसवुन करू सेदि-दाता ।  
माता लक्ष्मी जेनअनि छेयि ॥



## लग्न चीरि वनवुन

- 047 दक्षप्रजापतुन ब्रह्ममुण आमुत ।  
लग्नय चीरि तय जाफल हेथ ॥
- 048 तति द्राव सुलि तय रथि वेमानस ।  
योत वोत लक्ष्मी थानस पेठ ॥
- 049 ओरअ आव ब्रह्ममुण चाव द्वारिकाये ।  
योरअ द्रायि दीवकी आलथ हेथ ॥
- 050 होहरयेव सूजहय ब्रह्ममुण नादस ।  
महाराज लालस त लूक लछेस ॥



## राम-राम भजन

नेशकल नेशकामयए कर भजन राम-राम ।

- 051 रम्बा रामये, पानय यूरि आमये ।  
रूदुम यथ गामय, कर भजन ॥

- 052 सुप्रकाश गोछ मै ध्यानय, सूहम सुमरणय ।  
चानि सअति फोलि में मनयए कर भजन ॥
- 053 संसार क्रूठ रगुयि, अथ दवा छुयि वेचार ।  
पानसअयि निश सुचार वेचार कर भजन ॥
- 054 संसार कअरिजालय, सेठाहन वोलवय नालय ।  
केन्ह रुदि अन्द खोशालय, महालय ॥
- 055 संसार सोपन माया, हवस पेठ छेयि काया ।  
ठर पननि छेयि में छाया सोकाया राम रामय ।
- 056 संसार दोख मोतुय, आयेयि योर कोतुयि ।  
लारुन छु ब्येयि तोतुयि, सात-सात राम
- 057 अन्दरी अचु अन्दर, तति छु शेव मन्दर ।  
तथ अन्दर शाम सोन्दर, बोलवुन राम
- 058 सुथि छुत-छुत सुये, तस क्या तानि नाव छुये  
गोविन्द गोर छु पान दयेए कर ॥
- 059 असमान छेस ब प्यवान जमीन छुम दब लगान  
तवय दवा छेस मगांन, भजन कर
- 060 वोमाओ मानि योहय, वोमाओ मनय ।  
सूहम सू केहन गमय भजन कर

- 061 योत यिथ क्या में कोरुम दय नाव कोनअसोरुम  
जोनूम न चूर फोरुम, कोवासना ।
- 062 वेचि क्या तस वनुन, यिमन जोन जीव पनुन  
नार विजि क्रूर खनुन, भजन ।
- 063 मोगछ मोह भ्रमस लय थव सूहमस ।  
सअँपअनि ज़्याद कमस भजन ।
- 064 रूपअ किनि नाव मनुष्य प्योम नफचुन गोम  
गुदोम क्रूठ ती चालुन प्योम, भजन ।
- 065 मो गछ बाम्बरे, काल भय तन हरे ।  
येति कुस घर करे भजन ।
- 066 गोर सुन्द ध्यान सोरुन तअसि पत वाति दुरुन  
सुयि गोव मान करुन अभिमान ॥
- 067 हा मन क्याजि ब्रअम्योख ।  
क्रूघ निश कोन श्रम्योख  
सतस प्येठ कोन नेम्योख, सतगोर ॥
- 068 करयोमय जारपारय, दया सागर दितम तारय ।  
छु चोन नार वार वारय, तारवुन ॥
- 069 भक्तिस दया छु गारन, बल्कि तस पत लारन  
लछ मन्ज तस छु चारन भजन ॥

- 070 दयो सोरुयि छु चोनुयि,वेचारयि योत छु म्योनुयि  
सुयेय ज़ोन तअमि मोनुयि भजन ।।
- 071 गणपत छु डीड़वोनी,थव च तस सअति ज़ानयि  
तति छेयि मोज भवअनी, आदि शक्ति कर ।
- 072 मूर्ख मन गछि मारुन, अम्यासचि हेरि खारुन ।  
जेरि जेरि गछि तारुन, जेरि अकि ।।
- 073 मन गोव गावयि, गछि दियुन धर्मसयि ।  
वैतरनि दियि तारय, सुतारय ।।
- 074 पकुन गछि बजि वते, सोर थव गोर कथे ।  
रोवमुत यियि अथे, भजन ।।
- 075 ओम गोव यरि वारय, ओमगोव परिकारय ।  
ओम गोव रोज़गारय, सु तारय रामय ।।
- 076 दय नाव सोरिजि रसययिथनअ बोजि कांहठसय  
वैष्णअ भवनस ब गछय भजन ।
- 077 सोदामुन कोम फोलुयि त्रेभवन हेथ सुयिचोलुयि  
तोति तअमि लोग कोलुयि, नेशबोद्व ।।
- 078 येति युस तोत गछान, कहवचि पेठ छु खसान  
प्रज़लिथ तति छुवसान, भजन ।



- 079 दूरि कथ जायि रुजिथ बल्कि मेयमन्जचबिहिथ  
वेनती गछत बूजिथ, भजन ॥
- 080 धूनुम फम्ब त कपस, सन्तोष गोव सथर ।  
ब्रह्म गण्ड छु येन्दरे पन, भजन ।
- 081 ओम गोव येरि लूकय, ओं गोव परिलूकय ।  
ओंम गोव लूक-लूकय, शोलूकय ॥



अपनी दिवंगत माता की  
पुण्य स्मृति में यह भजन अपिर्त है ।  
ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

## ( वीगिस नचुन )

- 082 ज़ाख दिवकी रोछनख जसदाये,  
जेन जाय चअनि मथराये ।  
दशअ गन्जिनय यजमन-बाये  
असतानन त ब्येयि मन्दरन ॥  
गाश आव दशि मुचरन आये  
जेन जाय चअनि मथराये ।

083 दययन दितुख रोछुख नानि  
 में देदि कानि सेदेयम ।  
 ज़ाखा यजमन बायि साने  
 चानि-चानि करान छेय ।  
 यादाश रूदया खानमालि म्यानि  
 में देदि कानि सेदेयम ।

084 सोनरि गोरुम कुण्डन सोनची वाजे  
 महाराज लालो लजियो पननि मअजि ।  
 येमि माजि दिचनय शैत्रह दोदचि नाजे ।  
 तस माजि शूमन सोन टेकिताल वाजे ॥

085 सोन्दरो-सोन्दरो हा शाम सोन्दरो ।  
 नन्द बबन तप कोर गूकल अन्दरो ।  
 खोनि गोछ आसुन मेति गोबराह ॥  
 कृष्ण जीयन जन्म दोर मथरायि अन्दरो ।  
 सोन्दरो मेति वनि दर्शुन हाव ॥

086 दशरथ राजन तप कोर अयोध्यायि अन्दरो ।  
 असि ति गौछ वनि सन्तान ॥  
 थन प्योव कौशेल्यायि निश रामचन्द्रो ।  
 सोन्दरो मेति वनि दर्शुन हाव ॥

- 087 पोंपर दिचम शमाहस गथा ।  
 रथा वन्दयि मालिन्यो ॥  
 बेनि छि बअयिस रफाकथा ।  
 रथा वन्दयि मालिन्यो ॥  
 मे छेयि बअयिजाननि सथा ।  
 रथा वन्दयि मालिन्यो ॥  
 आलथ त्रावेम मोहरअ हथा ।  
 रथा वन्दयि मालिन्यो ॥
- 088 में बेनि शराह द्रावयो  
 लेम्बि मन्ज पम्पोश फोलुम सरा ।  
 यजमनन बनअव काह तारव लरा ॥  
 शारिका बीठस थरा दिथ ।  
 शामन वोतम नोश रंग चअरा ॥  
 में बेनि शराह द्रावयो ।
- 089 हुम वोथुम वीगि खोतुम  
 तोत वोथुम यारबल ।  
 महाराज वीगि खोतुम  
 तोत वोथुम यारबल ॥

090 सोनअ मोक्तअ बोरुम ढबस अन्दर ।

सोन्दर यियमय वअरिवियि ॥

सोन्दर यियम हशेन अन्दर ।

सोन्दर यियम जामन अन्दर ॥

091 में बेनि राशुन पपिथ आव ।

येलि जाव रामजू तेलि वर्षुन ॥

जमीनि सत फल ववनय आव ।

राम नवम दोह दितुनम दर्शुन ॥

मे बेनि राशुन पपिथ आव ॥

092 चन्दुनयि-चन्दुनयि बाह सास चन्दुनयि ।

चन्दनयि कुलि तल लाला द्राव ॥

दश गन्डि-गन्डि ब वअचस लप्दनयि ।

कोछ हेथ लछनोव करहस नाव ॥

कृष्ण भगवानो आयिसअय वन्दनयि ।

चन्दनयि कुलि तल लाला द्राव ॥

093 बागस गयमो जअयि गुलि ताज ।

चे महाराज लागयो ॥

यजमननेन गुलि गयि ताज ।

चे महाराज लागयो ॥

- 094 सदर मन्ज खोतमय पारिजात कुला ।  
 सुति फोलि बअति कर शुहलाह ॥  
 यजमनस जामय शूभिदार गुला ।  
 सुति फोलि बअति कर शुहलाह ॥
- 095 मे गछि मीना लअगिथ सोनअ वअजि ।  
 ब छेस बब सन्ज खानमअजि ॥  
 में गछि दोति सूठ बेयि सोनअ वअजि ।  
 ब छेस बायन हन्ज खानमअजि ॥
- 096 नअगिनि अन्दर विगिनि खचय ।  
 अथन मोक्तअ दोछय हेथ ॥  
 यजमन सुन्द घर कुन खचय ।  
 अथन मोक्तअ दोछय हेथ ॥  
 स्येन्दरि बरिथ नेन्दरि हचय ।  
 अथन मोक्तअ दोछय हेथ ॥
- 097 लोकटि यजमन खोनखो रथे ।  
 अथे लाल त रत्न हेथ ॥  
 बाये म्याने खोतखो रथे ।  
 अथे लाल न रत्न हेथ ॥  
 निकय लालनि आहम अथे ।  
 अथे लाल न रत्न हेथ ॥

- 098 नचन नचन फलिम खोर ।  
 में गछि जोर सुवुनयि ॥  
 वुछिव यजमन सुन्द शोर ।  
 अमि मा सुवुयि कंअसि केह ॥  
 ओगुन न तय दोगुन जोर ।  
 में गछि जोर सुवुनयि ॥



(नोशि अन्न विजि वनवुन)

- 099 यजमान बाय छै वाह वाह करान ।  
 शाह आव रोनि हेथ गाह त्रावान ॥
- 100 महाराज लालो सोन सन्दि कलमो ।  
 लक्ष्मी अनिथन हलमस केथ ॥
- 101 आँगनस सानिस्त मोखत आव छकनय ।  
 महारेनि महाराजनि पकनय सत्य ॥
- 102 सतन लरेन कुनुय येकल ।  
 योत आय कुकिल ओल येरने ॥
- 103 महाराज लालो ओम दोद चेतमो ।  
 हाम गाव दितमो जाम ब्रान्दस ॥

- 104 महाराज लालो हील मत हेतमो ।  
नील गुर दितमो ज़ाम ब्रान्दस ॥
- 105 वोन्द नय यियीय वापस नितमो ।  
तामथ दितमो शूभि बापत ॥
- 106 गर नाय म्योन गर छुय चोनुय ।  
च हय आयख रोज़नि सोनुये ॥
- 107 ब्रान्दस खसवुन हयोतुथ खोचोनुय ।  
जोनुथ छुम हशि तोनुये ॥
- 108 यति नाय हशि तोन यति माजि तोनुय ।  
च हय आयख रोज़नि सोनुये ॥
- 109 हेरन खसवुन हयोतुथ खोचोनुय ।  
जोनुथ आसेम ज़ाम तोनुये ॥
- 110 यति नाय ज़ाम तोन यति छु बेनि तोनुय ।  
च हय आयख रोज़नि सोनुये ॥





ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

## भाग - ३

### मेखला वनवुन

- 001 शोकलम करिथ वनवुन ह्योतुय ।  
शोभ फल दितय मअज भवानी ॥
- 002 स्वर्ग पेठ अनतहोन पंड़िता छारिथ ।  
अग्न कोण्डस कियुत दियि साथ चारिथ ॥
- 003 नवि नेशपतरे रुत द्राव साथा ।  
जगि हुन्द दाता छु श्री भगवान ॥
- 004 सोनसन्दि टोंगरे रोपसन्दि बेलो ।  
बालय वालुस शेलै म्येच ॥
- 005 मेचि तय पअनिस खअच खम्बीरो ।  
गम्भीर खोरमय अग्नय कोण्ड ॥
- 006 नाराण जुवस मागय मंगे ।  
कन्यक जन्गे अनहोसे ॥





- 016 अग्न-कोण्डस सोठकुव बर छुय । 00  
हर छुयि प्रारान दशनय ॥
- 017 अग्न कोण्डस कोंजे ह्योर छिय । 00  
जुर छुय वासदीव राजनुय ॥
- 018 असि करमच कअम प्रिछिथ गोरस । 00  
ती आव परमीश्वरस खोश ॥
- 019 जमना जलय गगंय मेचे । 10  
हुमस क्युतुय लिवसय ॥
- 020 गंग-बल तोरमय गङ्गवा नोटुय । 10  
वोतेम वोटुय लिवसय ॥
- 021 आकाश वछखय अम्भरावतिये । 10  
श्री सरस्वतिये कानी लिव ॥
- 022 हरमोख पतकुय श्रूच-पोत्र तोरमय । 10  
हुमस क्युतुय लिवनोवमय ॥
- 023 ओमि-दोद सअती कानी लिवसय । 10  
सौरी समिवो सीवाकार ॥
- 024 दोद हर सअती कानी लिवसय । 0  
ओरअ यिय ब्रह्मण खिर वथरोस ॥

- 025 वोशनारि थोवमय पोशबाग लिविथ ।  
दशरथ राज खोत श्रान करिथ ॥
- 026 स्वर्ग खोत सालिग्राम अरननि वेरे ।  
धर्मच जाय लोग छांडने ॥
- 027 स्वर्ग खोतयेय चंदन टूपुय ।  
रुपय नाराणजूवने ॥
- 028 सोन सन्जि मकचे रोपसुन्द दन छुय ।  
वन खअति चंदुन चंदुन चटने ॥
- 029 पण्डितव वेद हेच पननिस चाटस ।  
रातस कोरहय हुमुक सन्ज ॥
- 030 खोरन लव दिव जपके जोरो ।  
गोरो वन्दयो पादन रथ ॥
- 031 दोरन द्रायस मोक्तव शेरो ।  
फेरन वाचय चोन डेर बल ॥
- 032 शेव-लूक जाये छेय परमीश्वरो ।  
गोरो वन्दयो पादन रथ ॥
- 033 लव दिव खोरन ब्योयि शेंख शेरस ।  
नख छुख ब्रहस्पत गोरस कुन ॥

- 034 मेखलि सन्ज ह्योत धमयन्ती माजे ।  
तेल, डूनि तय गेव, श्रीफल ॥
- 035 खारसी पम्बच्छकिशमिश बादाम ।  
आदन बोजीय लसिनय ॥
- 036 कलशस खारी त्रिशूल डूनी ।  
ब्रह्मा, विष्णु त महेश्वर ॥
- 037 कलशस खारुस बादाम सासा ।  
दासस रूमय-ऋषेण आय ॥
- 038 यूरि कुन मरेद तय तूरि बेछेयवो ।  
तारक जितिश वार रख लेछेयवो ॥
- 039 अर्षे वथिमति अर्जन दीवो ।  
फर्षस पेठ छय कलशस जाय ॥
- 040 कलशिच विजे रअथि वोथ नाराण ॥  
कलशुक मण्डुल वाहरान ओस ॥
- 041 कलशिच विजे दय टोठ्योयो ।  
पूजि ब्यूठ्यो नारायण ॥
- 042 बअडि आख बोल त कृष्णनि लोलय ।  
शोलय दिवुन द्योकुय लाग ॥

- 043 वासदीव राजिन गुरि गण्ड बागस ।  
बडि ब्रह्मण लाग दातस द्योक ॥
- 044 मोखत चव डोलस तखति खानस ।  
द्योक लाग बादशाह देवानस ॥
- 045 दातो करयो ताबेदारी ।  
गोरन गोण्डयो नारीवन ॥
- 046 मन्ज रोबरखानस वहारिमय डूनी ।  
सोन कोसम तय मादलि पोश ॥
- 047 सदाशेवस मिन्नत मन्गे ।  
कन्यक जन्गे अनहोसे ॥
- 048 हुमस ब्यूठहम गोर हेथ पानय ।  
सोनसन्दि बानय वाहरोसे ॥
- 049 येति पेठ गयसय तुलमुल पानय ।  
तनिकिस थानस दिवता जान ॥
- 050 योत वाति रॉगन्या त भूतीश्वर पानय ।  
सोनसन्दि बानय वाहरोसे ॥
- 051 कलशस पूज कर ओतेम नरयो ।  
हरि हरो हलदरो ॥

- 052 कलशस पूजकर धर्बे-तुल्यो ।  
टाँपट कुल्यो यजमन सन्दयो ॥
- 053 कलशस पूजकर पम्पौश पतरो ।  
मोखतव छतर छुख वास्दीव राजोनय ॥
- 054 कलशस पूजकर कोंग तय सेंदरे ।  
इन्द्राजिनि रुचि भवि नय ॥
- 055 कलशस पूजकर पोशव सअती ।  
लछनावि जामति लसीनय ॥
- 056 कलशस पूजकर अर्ग त पोशो ।  
सोरिव तप-ऋषे सदाशिव ॥
- 057 पूरे कने खोतखो सिरियो ।  
दूरे कोरमय नमस्कार ॥
- 058 चिय छुख सारिनय प्राणावेशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 059 सीतायि ओसुस सोनसुन्द केशो ।  
स्वारिथ नियथन इढँख वन ॥
- 060 राम लक्ष्मण सुन्द दर्शुन डेंशो ।  
सोरिव . . . . . ॥

- 061 कन्यका रछिय वनक्येव रेशो ।  
स्वारिथ नियनय इदँख वन ॥
- 062 युथहा हीमाल पर्वत निशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 063 वासदीव राजनि धर्म पोरषो ।  
जायि-जायि बनाविथ देवान खान ॥
- 064 सोठकव चीन तय मोखतवि पोशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 065 कोतर बच्चन करु बोल भोषो ।  
कोतरि चानि छय हुमस पेठ ॥
- 066 दोखतरि बोयी मोखतव पोशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 067 फागनि फोलखो भेदमुशुक पोशो ।  
गोशस रटथम कुलिस पेठ जाय ॥
- 068 गोड़ने सोन्त आहाम खोशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 069 चित्रअ फोलहम वीरिकुम पोशो ।  
गोशस रटथम जंगलय जाय ॥

- 070 नवरेह दोहो आहाम खोशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 071 पेठय बान फोलहम चेरय पोशो ।  
गोशस रटथम कुलिस पेठ जाय ॥
- 072 मेव चोन हुमन त यज्ञनेन खोशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 073 आदन फोलहम बादाम पोशो ।  
गोशस रटथम बागस मन्ज जाय ॥
- 074 भर्ग चोन सब्ज तय मेव चोन खोषो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 075 सोन्त फोलहम चूठी पोशो ।  
गोशस रटथम बागस मन्ज जाय ॥
- 076 भर्ग चोन सब्ज तय मेव चोन खोषो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 077 वहकी फोलहम गुलाब पोशो ।  
गोशस रटथम वारि मन्ज जाय ॥
- 078 भर्ग चोन वोजुल तय मुशुक चोन खोशो ।  
सोरिव . . . . . ॥



- 079 जीठी फोलहम च जाफरि पोशो । ८८०  
गोशस रटथम वारि मन्ज जाय ॥
- 080 चयि छुख रागन्यायि भूतीश्वर खोशो । ८८०  
सोरिव . . . . . ॥
- 081 हारी फोलहम गारी पोशो । ८८०  
गोशस रटथम सरस मन्ज जाय ॥
- 082 कोशन भाषण छहमो खोशो । ८८०  
सोरिव . . . . . ॥
- 083 श्रावनि फोलहम कपसे पोशो । ८८०  
गोशस रटथम डारस मन्ज जाय ॥
- 084 यरि लूक परिलूक परदय पोशो । ८८०  
सोरिव . . . . . ॥
- 085 भादरि फोलहम धतरी पोशो । ८८०  
गोशस रटथम सूर बनि जाय ॥
- 086 सदा शिवस आहाम खोशो । ८८०  
सोरिव . . . . . ॥
- 087 आशद फोलहम जाफरि पोशो । ८८०  
गोशस रटथम वारि मन्ज जाय ॥

- 088 ठोकर सअबस छहमो खोशो ।  
सोरिव ..... ॥
- 089 कार्तिक फोलहम कोझय पोशो ।  
गोशस रटथम पोंपुरह जाय ॥
- 090 ब्रह्मण तीजस छहमो खोशो ।  
सोरिव ..... ॥
- 091 सोपूरि वत्ते लोग गलगोशो ।  
शारद बलस दिवया जान ॥
- 092 माजि शारदायि हुन्द दर्शन डेंशो ।  
सोरिव ..... ॥
- 093 नूनरि वत्ते लोगमुत्त रोशो ।  
गगंय बलस छि दिवया जान ॥
- 094 बुथि शेरि वसवनि लजमो त्रेशो ।  
सोरिव ..... ॥
- 095 अनन्तनाग वत्ते लोगमुत्त गोशो ।  
झायि वुहरि बटन आव मलमास ॥
- 096 चाकबल पेत्रन मोकलेय त्रेशो ।  
सोरिव ..... ॥

- 097 पहलगाम वत्ते लोगयो गोशो ।  
अमरनाथस दिवया जान ॥
- 098 सदा शिव सुन्द दर्शन डेंशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 099 शुपयन वत्ते लोग गलगोशो ।  
दिगाम नागस दिवया जान ॥
- 100 कनिकन त बालकन मोकलेय त्रेशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 101 हब्बकदल वत्ते लोग गलगोशो ।  
गणपतयारस छि दिवया जान ॥
- 102 गणपत सअबुन दर्शन डेंशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 103 बिन्द्राबन वत्ते लोगयो गोशो ।  
जमनायि पेठ रास मन्डला जान ॥
- 104 राधा कृष्णुन दर्शन डेंशो ।  
सोरिव . . . . . ॥
- 105 अग्नय कोण्डस सन्दुस त्यंगुला ।  
मन्गला जन्गे अनोसे ।

- 106 अग्न सन्द्रावुस चन्दन लशे ।  
जिनी त्रिशे लागोसे ॥
- 107 अग्न सन्द्रावुस चंदन गणय ।  
वनय वालुस तुलसी काठ ॥
- 108 अनिगटि कनिनय करिथय नालमतिये ।  
श्री सरस्वतिये यारबल वस ॥
- 109 यारबल खचखय श्राणा करिथ ।  
ध्याना सोरिथ भरथा सुन्द ॥
- 110 इठख वन खचखय नारी नारी ।  
बजि बेनि हारी तरंगा गन्ड ॥
- 111 अवलय अनिथय नारिवन थाजी ।  
शाबश शरद माजिये ॥
- 112 हीमाल पर्वतस करिथय अटय ।  
कूर छख लोटय रायेनी ॥
- 113 दीवकी मअजी करिथय अटय ।  
कूर छख दीवख राजनी ॥
- 114 कृष्णअ जुवनि चजियय गटय ।  
कूर छख दीवख राजनी ॥

- 115 इढख वनची ऋष्टेष्टि वाई ।  
दिव रायिस मन्ग नारीवन ॥
- 116 नारीवन थाजी अनिथय मन्गनाविथ ।  
कमि वान अनिथय रंगनाविथ ॥
- 117 चंदन लति हन्गन गन्ड हन्ग तुमारय ।  
बालि अछदारि खारि नारीवन ॥
- 118 वासदीव राजनि अनतय माली ।  
दअंतन सअति तार नारीवन ॥
- 119 वासदीव राजनि वानेनि कूरी ।  
कानी पेठ खार नारीवन ॥
- 120 शाबश तस माजि यस माजि जायख ।  
आयखय खारयिय नारीवन ॥
- 121 बिशमक राजनि गाटजि कूरी ।  
पाटिव खारिथय नारीवन ॥
- 122 नारिवन खारिथय यग्नकि विजे ।  
दिवता पूजे आमति छिय ॥
- 123 दीवख राजनि पोखतय कूरी ।  
मोखतवि खारिथय नारीवन ॥

- 124 दीवख राजनि कूरि कोमारी ।  
हारी स्वारिथय नारीवन ॥
- 125 बिशमक राजनि असवनि हारी ।  
प्रसनय खरिथय नारीवन ॥
- 126 दोहस मन्जय कोह बाल छोंडथय ।  
तवय गन्डिथय नारीवन ॥
- 127 दीवख राजनि लायख हारी ।  
छायख नारीवनन छुय ॥
- 128 हत वन छोडथय लछ तप कोरथय ।  
हासिल कोरथय अकनन्दुन ॥
- 129 आकाशि वछखय इन्द्र घर चायख ।  
आयखय रिच रिच कामि करने ॥
- 130 दिवकी मातायि हुरि बेछायखय ।  
मुरि रचायथम रत्नय फल ॥
- 131 कृष्ण जुवनि वर्गस चायखय ।  
आयखय रिच रिच कामि करने ॥
- 132 थकेवनि फेरन मोख किथ द्रोयय ॥  
सोख सअति यजमन बाईये ॥

- 133 टेकि पूचि टेडि मोम्ज नरि छेखय दारान ।  
यायमस छेख करान लोलमत लाय ॥
- 134 टेकि पूचि चोन पाटि किनारी ।  
बजि बेनि हारी नारीवन हाव ॥
- 135 टेकि पूचि चाने अतलिं वथर ।  
शत्र पेयई पादन तल ॥
- 136 पोशत माली पोशत छुयेय ।  
ठठन दार दूरन त जालि जुमकन ॥
- 137 सर पम्पोशन टूरि गय ताजय ।  
जर महाराजय लसिनम ॥
- 138 तन कमि दिचयो पननी मामन ।  
कोझ. जामन छेय जेबाई ॥
- 139 तन कमि दिचयो कसनं तमामन ।  
जामन वुछहोय जेबाई ॥
- 140 पत ब्रोंह वुछयो बब इन्द्राजिन ।  
मामन खोरखो कोछे केथ ॥
- 141 यारबल खसिथ गोरस निश चारखो ।  
जारखो इन्द्रे करने क्युत ॥

- 142 यारबल स्वसिथ पदम पोश प्रउवुथो ।  
नोवयो गंग जल सअति तन ॥
- 143 वुफि आव कोतुर कुठि ब्यूठूखो ।  
दयि इयूठूखो भाग्येवान ॥
- 144 मालिस खोवरी गोरस दछनी ।  
वनि चे रछिनय नारायण ॥
- 145 कोङ्ग तय सेन्द्रे वयियो ब्राटी ।  
ब्रह्मणन पिलवुस श्राण पठ ॥
- 146 दय सन्दि धर्म त इन्द्र सन्दि दान ।  
ब्रह्मणन पिलवुस श्राण पठ ॥
- 147 सोमन कपसा ववनय आये ।  
कृष्ण महाराजिन यछायें ॥
- 148 वासदेव राजनेन डारन द्राये ।  
चूर दिनि आये ग्रीस बाये ॥
- 149 शबनम लवि सअति फलिय आये ।  
कृष्ण महाराजनि यछाये ॥
- 150 वासदीव राजनि जेछि जेछि कपसे ।  
दपसे करसे योने हन ॥



- 151 रथि वोथ तोस तय अथि व्यसनोवमय ।  
तथि करनोवमय योने हन ॥
- 152 मासव व्यसनोव तोसय फोतुय ।  
पोफव कोतुय कलाबोत ॥
- 153 दिवकी व्यसनोव कनिकव कोतुय ।  
योन्या लोदुय नाराणी ॥
- 154 समिथ विगनेव गछि कुठे ओल यूर ।  
मालि त्रोव जालि योनि नालि गोबरस ॥
- 155 गोडते सोन्तय जंग आयि रचये ।  
रोग फलि जन्बरव बागसं हिय ॥
- 156 त्रे लर बब सन्जि त्रे लर गोर सन्जि ।  
शु लोर योन्या प्रोवुथो ॥
- 157 टेकिस, योनेस त काकनि बन्दस ।  
मोजेय वन्दुस चन्दन तन ॥
- 158 कनि फोट पोनि तय वनि कुल ज़ोयो ।  
अनि गाश ओयो लसिनय ॥
- 159 योनेस चानिस सोन सन्जि टेकय ।  
यि कसिय डेकय बजे जाव ॥

- 160 यि हय ज़ाव वासदीव राजनि रोनि ।  
बेनि ज़ाव कमसा सोरने ॥
- 161 महाराज लालो लजियो बेन्ये ।  
यि कस राजरेने ज़ाव ॥
- 162 योनेस चानिस रोफ त रोने ।  
यि कस राजरेने ज़ाव ॥
- 163 च़स गोव असरन, बर्ग आयि बोनेन ।  
ब्रह्मणव गथ करि योनेस पेठ ॥
- 164 मोन्डुल लेखोयो सोमि सोमि जाये ।  
शाये कृष्ण जूवने ॥
- 165 वासदीव राजनि होगे वाल्यो ।  
रोगे छानस मोहन्युव सोज़ ॥
- 166 मोहन्युव सूज़ितव विश्रार्कम छानस ।  
कृष्णस किच अन दूजिय जान ॥
- 167 कृष्ण गोम चाटहाल अथि हेथ दूजिय ।  
मोजिय जूजिय आलोसे ॥
- 168 कृष्ण गोम चाटहाल माजि दिचिस शीरीन ।  
मअलि बअगराविस दोछि दोछि दयार ॥

- 169 कृष्ण गोम चाटहाल मठस दूज मिलर । ८५  
पत गयेस बेनि तलर दूज मिलर हेथ ॥
- 170 हचि हिन्ज दूजी मेचि सअति बरिजि । ९५  
ओंगजि सअति करिजि प्राणायाम ॥
- 171 सोन सन्दि दूरदल, रोप सन्दि कलमो । १०५  
गोडन्युक अछुर छुयि ओमअवो ॥
- 172 बलिराम जीयिनि सोन सन्दि कलमो । ११५  
दोयिम अछुर छुयि स्वयं सू ॥
- 173 ओमअवो स्वयं सू तेविसते पविजे । १२५  
ध्याना सोरिजे श्री रामुन ॥
- 174 विधारम्बस कुनुयि पअथर । १३५  
नून वोर तय मोहरा प्रास ॥
- 175 नेमिथ गन्डयो धर्बि डेन्टोनय । १४५  
समिथ दीवता सोनुय आव ॥
- 176 लोलय पूतिस मृगछाला नाली । १५५  
मालि छुनुयो किन ब्रह्मणी ॥
- 177 वासदीव राजनि जाफल जृण्डो । १६५  
छअगिस छुनयो ब्रह्मण गण्ड ॥

- 178 दातव कअरहय ताबेदारी ।  
गोरव लोगहय शेरस द्योक ॥
- 179 डेक प्रजोलुय द्योक वोजोलुय ।  
मोललुय गण्डुस कानकनि बन्द ॥
- 180 अवलकि कवलो लव दिव खोरन ।  
गोरन सअति रोज़ शुकि मानमान ॥
- 181 सोनसुन्द तर्पुन दछिनिस मरनस ।  
कर्मस ब्यूठुय नारायण ॥
- 182 वासदीव राज़नि मनि क्रेक गोबरो ।  
सोन वाजि सअति कर आचमन ॥
- 183 गुहि, गेव, दोद, गुमित, नाबद सोंबरिथ ।  
अमृत सअति कर आचमन ॥
- 184 कृष्ण महाराजस सोमद्र बेनिये ।  
समदन थनी मलो से ॥
- 185 वासदीव राज़नि लाल तय दूरो ।  
अथन समदय मूरय छेय ॥
- 186 हाथी पोरिच चाँदि मगनअवमय ।  
तअथि गरनोवमय अनीदि थाल ॥

- 187 दोहस गिन्दुथम तासन त खासन ।  
मासन ति गोवहम अबीदे ॥
- 188 अथन लाजिमय सोन सन्जि वाजे ।  
माजेन गोवहम अबीदे ॥
- 189 दोहस फ्यूरहम आनय डबन ।  
बबन ति गोवहम अबीदे ॥
- 190 जाविलेन जामन कजिमय गेने ।  
बेनेन गोवहम अबीदे ॥
- 191 टेकिस मन्जबाग छुयो चिबय ।  
जुवन ति गोवहम अबीदे ॥
- 192 चाहम ईशर जूवने गोफे ।  
पोफन ति गोवहम अबीदे ॥
- 193 दोहस फ्यूरहम चाकवारेन ।  
काकन ति गोवहम अबीदे ॥
- 194 दोहस फ्यूरहम जागीर गामन ।  
मामन ति गोवहम अबीदे ॥
- 195 माजि हन्जि व्यस तय मालि सन्दि यार छिय ।  
मोहर तय धयर छिय फिरेवान ॥

- 196 किशमिश राठन वहरिथ इखिये ।  
पखिदार आयवो अबीदे हेथ ॥
- 197 बअडि आख बोलत महाराजनि लोलय ।  
शोलय दिववुन ट्योकुय लाग ॥
- 198 श्रीफल सअती करिव आदि दर्शुन ।  
सोफल लक्ष्मी वअतिनव ॥
- 199 सुलमान मेच तय गङ्गाय वाने ।  
सुभद्राये खोरयो वारे दान ॥
- 200 मेचि तय पअनिस खोत खम्भीरो ।  
गम्भीर असि खोर वारे दान ॥



लीला

- 201 वारिदान खोरनय सुभद्राये ।  
अर्जन दीवनि भार्याये ॥
- 202 हरमोख पेठचे बजि गङ्गाये ।  
सोन सन्जि गङ्गाजे रोप सन्दि ठान ॥

- 203 गङ्गवानि सअती मेघ अअडरन आये ।  
अर्जन दीवनि भार्याये ॥
- 204 स्वर्ग अन्दरय क्राजि मास आये ।  
सोन सुन्द वारि फोत कलस पेठ हेथ ॥
- 205 सुभद्रा सअनि तस रटने द्राये ।  
अर्जन दीवनि भार्याये ॥
- 206 वयकोण्ठ पेठय कामदीन आये ।  
विगिनि चाये दोद हनि सान ॥
- 207 आमि दोद सअति भत रननय आये ।  
अर्जन . . . . . ॥
- 208 छत्तरहार सूजनय अन्नापूर्णिये ।  
वारि दानस पेठ रननय आय ॥
- 209 शारिका भगवती बअगरनि द्राये ।  
अर्जन . . . . . ॥
- 210 रअथि वोथ वारिदान अयि रोट दिवते ।  
सीवके नाराणजूवने ॥
- 211 वारेदानस शैत्रीह गग छियि ।  
बेनिये लग छैयि बोयि लसिनय ॥

- 212 वारेदानस शैत्रीह चारे ।  
हारि वाजि छतहार रनणी किच ॥
- 213 वारेदानस कुनुयि पोथर ।  
नून वोर तय मोहरा प्रास ॥
- 214 सदाशिवस मिनथ मन्गे ।  
कन्यक जन्गे अनोसे ॥
- 215 क्राजि अनि त माजि थव दछिन ।  
पोफि ह्योच अछेन लागने ॥
- 216 वारे दानस सन्द्रुस त्यन्गुला ।  
मन्गला जगे अनोसे ॥
- 217 वारेदानस सन्द्राव चन्दन गणय ।  
वनय वालुस तोलसी काठ ॥
- 218 हारि रअनि भत वारि आमि दोद सअती ।  
आय दरि बायि म्यानि अगनस हुम ॥
- 219 वारि भत रोणमय गजूर लशे ।  
होदय शीशे कअरिजेस ॥
- 220 गोरन वोननय कन तअलि शब्दा ।  
रबदा नीरिनन राम सुन्द ह्यूव ॥



- 221 चन्द्रय तारको बम्मा जीयो ।  
मन्त्र बडि बोड होव थो ॥
- 222 शाबाश ब्रह्मा जियिनि चाटो ।  
पनने गाटय लयेनय ॥
- 223 अग्न वत्तर अनिमय ताशेवानय ।  
अग्नवाज् योत आव पानय हेथ ॥
- ◆◆◆◆◆

( लीला (शिव बोकुचि) )

- 224 लछि बअजि जीव जअचि वोलगिय आखो ।  
चाखो ब्रह्मण जनमस मन्ज ॥
- 225 वहिके जून पछि चोदिश दोह ज़ाखो ।  
तेलि ज़ाख पार्वती गणिश अवतार ।  
गगरस खसिथ प्रक्रम द्राखो ।  
चाखो . . . . . ॥
- 226 चित्र जून पछि नवम दोह ज़ाखो ।  
कोशेल्या मातायि राम अवतार ।  
राक्षसन, देतन गालनि आखो ।  
चाखो . . . . . ॥

- 227 बअद्रषेत घट पछि अठम दोह जाखो ।  
दीवकी कअद मन्ज कृष्ण अवतार ।  
राधायि सअती रास गिन्दीन आखो ।  
चाखो . . . . . ॥
- 228 राधायि निशे लोताश जाखो ।  
जन्मस आख रचअ कामि करने ।  
जन्मस यिथ चयि कर्म बोड़ द्राखो ।  
चाखो . . . . . ॥
- 229 अग्न-वत्तर अनिमय जन्मयकदलय ।  
अदलय महाराज सअबने ॥
- 230 अग्न-वत्तर अनिमय बारे-बारे ।  
दारि-दारि गेव हुम सारि म्येव सान ॥
- 231 पण्डितन ज्योतषेन हजार बूली ।  
हुमस कियुत ग्येव रठ तूलि-तूली ॥
- 232 ब्रह्मणन त यज्मनन हजार बूली ।  
अग्न-वत्तर रटहय तूलि-तूली ॥
- 233 स्वर्ग पेठ अनिमय दिवता गारिथ ।  
हुमस किच चारहम अग्न-वत्तर ॥

- 234 अपारि ओनमय गणपत सअब गारिथ ।  
विश्वामित्र ह्योथ चारनि ब्यूठ ॥
- 235 अग्नय-कोण्डस दछिन दार गव ।  
भार्गव राम ब्यूठ हुम करने ॥
- 236 हुमस पेठ छुम रुजिथ शोन्तुयि ।  
दशरथ राजुन ब्रोतुय गोम ॥
- 237 हुमस ब्यूठहम पूरि दारि मोखय ।  
अमि सोख भोविनय वासे सास ॥
- 238 अग्नय कोण्डस तेल ग्येव नख छुयि ।  
मोख छुयि चोतुर भोज नारायण ॥
- 239 कैलास डण्ड सअति अग्नै छुख खेलवान ।  
बलवान आहम तीज सोसतुय ॥
- 240 सतन वरियन कोरमय गूरय गूरय ।  
हुमस पेठ छुखो दूरय शाह ॥
- 241 चयिहो यिवन चयिहो आदन ।  
चयिहो बागुक बादाम पोश ॥
- 242 चयिहो दिवकी माजि हुन्द आदन ।  
चयिहो शारिकायि पादन तल ॥

- 243 बलराम दिवान बंडार सादन ।  
चयिहो बागुक बादाम पोश ॥
- 244 चयिहो शिवय नाथुन आदन ।  
चेयि पत्त गालिमय मोहरअत ध्यार ॥
- 245 चे गालिमय मोहर ध्यार मै छा लादन ।  
चयिहो बागुक बादाम पोश ॥
- 246 नाराणजूवन पोशि खयुर बोरमय ।  
चन्दनुक गोरमय वोमन होर ॥
- 247 वोमनहरिस छि जयि खानय ।  
दानय दानय हुमसे ॥
- 248 शुराह कूजँ अग्नमनन वोमन होर भयार ।  
अरथा बूजि-बूजि हुम करान ॥
- 249 यिकोर वलबायि गणिशराजस अर्जा ।  
चानि दोह चानि भक्ति निराहार ॥
- 250 रखमनि लसिनम कृष्णन् भर्था ।  
अरथा बूजि-बूजि हुम करान ॥
- 251 वासदीव राजनि टाठे पोत्रो ।  
अछिनयि पेठ थव नेत्रय पठ ॥

- 252 चयि छुख मालिस त गोरस निशो ।  
चयि छुख परान चतुरवीद ॥
- 253 सोन सन्जि हअँकल ऐरावतस ।  
त्रोगुनि मेखल तारानस ॥
- 254 चेर तय बादाम लदयो लोंगन्ये ।  
असवनि होगँने हुम करान ॥
- 255 चेर तय बादाम लदयो थालस ।  
लालस हुम तय अरनि रोत ॥
- 256 सअरी दीवता आमति सालस ।  
कृष्णस बोजनि चोतुरवीद ॥
- 257 गायत्री त्रावहस अन्दिस नालस ।  
लालस हुम तय अरनि रोत ॥
- 258 हुमस क्युत खोरमय मेव फोत दोबुये ।  
खोबये दिथ छुय हुम करान ॥
- 259 वासदीव राजनि वजीर गोबरो ।  
अकि अकि खजर हुमोसे ॥
- 260 शोन गोय रोनेन तय रोप जंगोलन ।  
हुम कर पादशाह बगलन पेठ ॥

261 शूँन गोय रौनेन त बाजय बन्दय ।  
हुम कर जाफल जूङन तल ॥



( लीला (शिव-बोकुचि) )

262 विनायक चोरम त आथवार दअरमय ।  
कोरमय बरखुरदारयि नाव ॥

263 माजि भगवती हुन्द वृत क्या दोरमय ।  
सुति ना कोरमय निराहार ॥

264 ग्येव चोचि दोद सअति वोदरा बोरमय ।  
कोरमय बरखुरदारयि नाव ॥

265 अठन रेतन कोठ क्या कोरमय ।  
नवमि रेतय जाम लेल वान ॥

266 थन येलि प्योम तय रन-प्येव कोरमय ।  
कोरमय बरखुरदारयि नाव ॥

267 चूरिमि दोह त्रीय तेला कोरमय ।  
शै मनअ गअरमय शेसतर क्राय ॥

- 268 दन्द गूजि सारी मसाल करिमय ।  
कोरमय बरखुरदारयि नाव ॥
- 269 सोन्दरि सौ गोन धन क्या गोलमय ।  
पशमीन सअती वजिमय तन ॥
- 270 रंग-रंग वस्त्र नअलि कित करिमय ।  
कोरमय बरखुरदारयि नाव ॥
- 271 दहन दोहन दह हन्डि मजीरमय ।  
कहमि दोह कोरमय काहनेथर ॥
- 272 जोतशेन त पण्डितन साला कोरमय ।  
कोरमय बरखुरदारयि नाव ॥
- 273 बहमि दोह लीखिमय रंग-रंग मन्डिल ।  
आकअशि नकाश लेखनि आव ॥
- 274 याजन सअति बुरसक थाल बरिमय ।  
कोरमय बरखुरदारीय नाव ॥
- 275 स्वर्ग पेठय वाज अननोवमय ।  
सास बअदि सिन सुयि रननोवमय ॥
- 276 सोनेन दीचन पितरेन थाल बअरिमय ।  
कोरमय बरखुरदारीय नाव ॥

- 277 मास-नेथरस सिवमय कर्व कनि खाली ।  
लोल सान असि बअगरनि द्रायि ॥
- 278 प्रासकेन ध्यारन कनवालि गअरिमय ।  
कोरमय बरखुरदारीय नाव ॥
- 279 शिशरस क्युत सामान क्या कोरमय ।  
मोज़अ-कनटोप त फम्ब कुर्ता ॥
- 280 तअथि पेठ इसराफ शिशराह मोरमय ।  
कोरमय बरखुरदारीय नाव ॥
- 281 शिमोसिस कोरमय अन प्रअप्योनुयि ।  
मनस दोदस कोरमय खिर ॥
- 282 खोस रिकिब त गिलास गोरमय ।  
कोरमय बरखुरदारीय नाव ॥
- 283 वोहरवअदिस बोड़ खर्चा कोरमय ।  
बन्धन त बान्धवन कोरमय साल ॥
- 284 नरेन कित सोन सन्दि गुनस गअरिमय ।  
कोरमय बरखुरदारीय नाव ॥
- 285 रव लोग भवनस थव आव कोंगस ।  
सनज़ लोग मेखल तारनस ॥



- 286 अग्निक दह खोत गगनचि राशी ।  
काशी अन्दरकि ब्रह्मण आयि ॥
- 287 यी कोर वलबाई गणीश राजनि राशी ।  
तति आयि डीशित यतिं कोरुन हुम ॥
- 288 रखमनि लअसिनम कृष्ण जी आशी ।  
काशी अन्दरकि ब्रह्मण-आयि ॥



(लीला (शिव-बोकुचि))

- 289 दशप्रजापतनिस जप-यग्नस तै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥
- 290 आवाहन कोरुन ब्रह्मा-लूकस तै ।  
ब्रह्मा, वेषण सअरी हेंथ ॥
- 291 सत ऋष येति बीठी वीद परनस तै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥
- 292 वासदीव राजस धर्म पुरुषस तै ।  
पूजा करनि बीठी ब्रह्मा दीव ॥

- 293 पूजायि लागस पम्पोश दस्तै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥
- 294 वोमायि वोननय शँकर जीयन तै ।  
मालिनेन जग छुय कोन प्रछहोय ॥
- 295 चति शूभहकना तथ यग्नस्तै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥
- 296 वोमा फीरिथ वननि लअज तसतै ।  
योरय गछनस अअब क्या छुम ॥
- 297 आसिहेक गांगल रुद्रकन हेसतै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥
- 298 वोमा येलि वअच तथ थानसतै ।  
तोत वअच तति नायि द्रास ब्रोँठ कांह ॥
- 299 क्याहतानि मलाल छुख मनसतै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥
- 300 यिम शोछि सोजहा महारूद्रसतै ।  
तसति पजिहे योत वातुनयि ॥
- 301 यग्न पेठ पजिहेस टयोक करनसतै ।  
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ॥

- 302 गगन पअकि दिवता भूमि पअकि सारी ।  
कृष्णस मेखलि वअरी वअच ॥
- 303 यियिव मालि ब्रह्मणव खसिव सानि हेरे ।  
लागिव मालि टयोक पोश अर्ग शेरे ॥
- 304 यियिव मालि ब्रह्मणव गछिव मालि जमा ।  
करिव मालि यग्नअकि समाचार ॥



(लीला (शिव-बोकुचि))

- 305 वोडि छेयि डेक पूच हलि ध्यार दीजये ।  
वोथि डेक बजिये केछा ख्याव ॥
- 306 उग्रसनीननि कूरि डेक बजिये ।  
नोश छेखय हेहरस क्या छुयि नाव ॥
- 307 वासदीव राजनि खोलि ध्यार दीजये ।  
वोथि डेक बजिये केछा ख्याव ॥
- 308 दीवक राजनि कूरि डेक बजिये ।  
कान्दुर ओयी चोचि पअज हेथ ॥

- 309 खण्ड चोचि ख्यविथक त दिख बोटचेर दजिये  
वोथि डेक बजिये केछा ख्याव ॥
- 310 असि दीवी छय सामवीद ग्येवान ।  
तोहि ब्रह्मण छिव शान्च करान ॥
- 311 ब्रह्मस्पत गोरी हाकन्य टाठ्यो ।  
शेंकय शब्दा बूजुय नो ॥
- 312 तोहि चन्द गैरि असि क्या बोजव ।  
मण्डलिस कअच गरि रोजोवो ॥
- 313 बोज मालि ब्रह्मणो रोज कन दारिथ ।  
मण्डुल त्राविजेन वेस्तारिथ ॥



( लीला (शिव-बोकुचि) )

- 314 राम त लक्षमण बारनि आसि ।  
राम-लक्षमण वनवासि गयि ॥
- 315 दशरथ राजनि सन्तान आसी ।  
खसिथ बीठी इण्डख वन ॥
- 316 बिहिथ ख्येवान तति वोपल हाक खासी ।  
राम-लक्षमण वनवासि गयि ॥

- 317 रावुन आयोस ब्रह्मण लागिथ ।  
सीता माता धर्मस दिम ॥
- 318 फन्द करिथ बारनि नियन वनवासी ।  
राम-लक्षमण वनवासि गयि ॥
- 319 क्राजि मासी बान किथिय आसी ।  
अकी कोदे पयनन आयि ॥
- 320 अडि द्रायि खण्डि फुटि अडि सोन खासी ।  
राम-लक्षमण वनवासि गयि ॥
- 321 तिमदय सतवय बारनि आसी ।  
तिमनयि ओसुय समऋषे नाव ॥
- 322 सोन्दब्रारि पतकनि रोज्ञान आसी ।  
राम-लक्षमण वनवासि गयि ॥
- 323 तिमदय पअँचवाई बारनि आसी ।  
तिमनयि ओसुयि पाण्डव नाव ॥
- 324 पाण्डव राज सन्दि सन्तान आसी ।  
राम-लक्षमण वनवासि गयि ॥
- 325 तिमदय त्रेनवायि बारनि आसी ।  
तिमनयि ओसुय त्रेकारण नाव ॥

- 326 वेष्ण-लूक, ब्रह्म-लूक, कैलास वासी ।  
राम-लक्ष्मण वनवासि गयि ॥
- 327 तेलिकि बटअ क्या धर्मो आसी ।  
कअशि दोह अअसी निराहार ॥
- 328 बअशि दोह छिय ख्येवान ब्रन-सूर खासी ।  
राम-लक्ष्मण वनवासि गयि ॥
- 329 अजिक बटअ कअति पापी अअसी ।  
कअशि दोह छिय ख्येवान गारि फलहार ॥
- 330 बअशि दोह छिय ख्येवान नेनि-भत खासी ।  
राम-लक्ष्मण वनवासि गयि ॥
- 331 तेलिक बटअ कअत्या धर्मो अअसी ।  
सत वुहुरि अअसि करान कन्या दान ॥
- 332 तिमनीय स्वर्गकि बर वथि आसी ।  
राम-लक्ष्मण वनवासि गयि ॥



## ( लीला (शिव बोकुचि) )

- 333 मेखलायि किति माल कर पोशनतै ।  
वनतय राम जू यियिना सोन ॥
- 334 दशरथ राजन तप करिनमतै ।  
म्योन घर गोछ युन अवतार ॥
- 335 तति जन्म दोरुयि चन्द्रनतै ।  
वनतय राम जू यियिना सोन ॥
- 336 राज दशरथन यग्न कोरनमतै ।  
तमि मन्ज खतिस जयि खिर टाकि ॥
- 337 सोनव त्रेयव ख्येयि बागरिथ जन तै ।  
वनतय राम जू यियिना सोन ॥
- 338 त्रेशवयव नवदि कोरहम वन तै ।  
कोशेलयायि निशे राम जू जाव ॥
- 339 भरत-राज जामय कैकी जन तै ।  
वनतय राम जू यियिना सोन ॥
- 340 शत्रुग्न जामय सुमित्रायि जन तै ।  
सुमित्रायि निशे लक्ष्मण जाव ॥

- 341 थन येलि पेयि तिम चोर बारनि तै ।  
वनतय राम जू यियिना सोन ॥
- 342 गोरन जानतक येलि अनिनखतै ।  
जातकन यिहिदेन छि रति रति गुण ॥
- 343 सीता वरनम राम-चन्द्रनतै ।  
वनतय राम जू यियिना सोन ॥
- 344 दशरथ राजनि जिगर गोशो ।  
क्षमा पोशे रोटथो ॥



(लीला (शिव-बोकुचि))

- 345 चख गछि त्रावपि रचर गछिन जाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 346 अपारि बालय तुलरा आये ।  
यपारि बालय यूरून ओल ।
- 347 तुलरा छि वजिमच माछिचि माये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥



- 348 यस त्रिय योत यित जायि त.प्याये ।  
तस त्रिय तति छुयि मोकलन पाये ॥
- 349 तस त्रिय तति छेयि स्वर्गस जाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 350 योस त्रिय जन्मस यितनअ येति प्याये ।  
तस त्रिय तति छुयि नरकुन नार ॥
- 351 तस त्रिय भगवान करि उपाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 352 पानय बनावथ मेचिव जाये ।  
पानय ब्यूठहस अन्दर अचिथ ॥
- 353 पानय ब्यूठुख ठोर दिथ छाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 354 यस त्रिय शेरस ब्रोंठ-ब्रोंठ द्राये ।  
तस त्रिय तति वैकुण्ठस छेय जाय ॥
- 355 स्वर्गकि लूख तति ब्रोंठ तस आये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 356 काल सन्जि कोण्ड येलि पयनय आये ।  
अडि द्रायि सेदि तै अडि द्रायि हलि ॥

- 357 यस यिथ लानि आसि तस तिथ आये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 358 चुशीथ लछ जीव जअच वोलगिथ आये ।  
हअर, चअर, कांटुर, मिनि, गअब त काव ॥
- 359 बोल छुख कुनुय त ब्योन-ब्योन जाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 360 बबस त माजि हन्जि खानमअजि आये ।  
बायन हन्जिय पअछि बाये ॥
- 361 बापोत्र दपान असि कम आये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 362 संध्या समयस तारख द्राये ।  
बोम, शुक्र तय ब्येयि बृहस्पत ॥
- 363 रात गयि गाश आव घट गयि छाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥
- 364 सगरव पतकनि वुजमल द्राये ।  
रूप छुस शामय सुन्दरुन हयू ॥
- 365 तमिचे प्रव येलि प्येयि प्रजाये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥

366 माजि हन्दि गर्भय बारनि जाये ।  
कूर गोबर तय सोयि छि दयगथ ॥

367 तिमय पानवअनि दुश्मन द्राये ।  
रोज संसार निश नेरमाये ॥



## (लीला (शिव-बोकुचि))

368 जन्मस यिथ गछि कर्म पूरुनयि ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥

369 भत पेठ हूनि मेट गछि त्रावानी ।  
वरियस समनय शैत्रीह सेर ॥

370 गोड़निचि डेडि छुयि हून आसानीय ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥

371 संसारस यिथ केहनअ लारोनयि ।  
यिनअ दपख सोरुयि छु म्योनुरे ॥

372 अथ छलिथ छुयि नेथनोन गछोनयि ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥

- 373 हेकरखयि जुव गछि सुलि वुजोनयि ।  
ब्रान्द-फश, सनिवार दयोनये ॥
- 374 तमि सअति पापन छु नाश गछोनयि ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥
- 375 बर पेठ फकीरस माफ गछि न करुन ।  
पापनि देग गछि न नोर वालनि ॥
- 376 तमि पाप जुव छुन कुनि मकलोनयि ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥
- 377 वय पेठ तोमल मोठ मोठ गछि सोम्बरनि ।  
फकीरस किछ थावअनिये ॥
- 378 तमि सअति मकलन पायि गछोनयि ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥
- 379 हिश दृष्टि गछि हर कांसि त्रावनि ।  
कांसी लगिनअ कांटोनये ॥
- 380 तस तति नरकस मन्ज छुयि गछोनयि ।  
परम रूप गछि दारोनये ॥
- 381 यग्न मकलाविथ अथि फोल रटिव ।  
ख्येयिव मालि पादशाह बागचि दछ ॥

- 382 माजि भवानि लोदुयि प्रअप्योनयि ।  
लअर ब्योल तय छतरीय हार ॥
- 383 हावसि प्रअप्युन थावसि चोदुयि ॥  
त्रावसि गोस तय बोजसि वीद ॥
- 384 मअजि पअरि लजियो कुकिल हटिस ।  
विगनि चोटिस प्रारान छेयि ॥
- 385 हशि नोशि अछ रछय ।  
यग्निस खचय प्रअप्यून हेथ ॥
- 386 यजमन बाय करान आये त पाये ।  
जानावर बीठिस जाये पेठ ॥
- 387 यकलय पेठचि कुकिलय हारी ।  
सनिवारी त्राव पअतर चाल ॥
- 388 मोजि पअरि लजिवो पोजयि परखनय ।  
सैदय फुटजि छुयि नखनयि पेठ ।
- 389 बर तल छुवो गुरि दुल प्रारान ।  
शुरि दुल सोन वसि यारबल ॥



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

भाग - ४

मकानस अचुन

- 001 ओ करं श्लोक पर श्री गणेशाय ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥
- 002 येति पेठ गयसय माजि शारिकाये ।  
मोजि शरिका अअस बतअ बअगरान ॥
- 003 फ्युरनख थालन त हअरिनख आये ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥
- 004 देवान-खानस शेयित्रीह दारे ।  
वोस्तन बनअविस नकशव सान ॥
- 005 दशरथ राज कौशेल्या शुरि हेथ चाये ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥
- 006 तुलमुल अन्दर रअग्न्या आये ।  
दशरथ राजुन घर चाये ॥

- 007 अन, धन, सोन पोश हेथ सो आये ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥
- 008 देवान-खानस अन्दरयि चाये ।  
नोशि कोरि आसय चाय बअगरान ॥
- 009 पोफ तय मासअ आसअ मारान ग्राये ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥
- 010 दानस बतस रोन पानअ वोमाये ।  
पानस सअति ख्यअविन बन्ध बांधव ॥
- 011 ख्येय च्येथ सेद गअयेख मनकामनाये ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥
- 012 लअराह बनअवम लोल तय माये ।  
सासअ बअदि आये कअम करने ॥
- 013 प्रेसर लअगिनख डेकन पोत्रन आये ।  
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ॥



## (सीता वाक (शिव बोकुचि))

- 001 मनि मन्ज वनि आम मेयि श्री रामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 002 गोविन्द परमानन्द रूप शामय ।  
निराकार छुख निरामय ॥  
वामन वासुदेव सहस्र नामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 003 पथकालि ईश्वरन राज मंजामय ।  
रावुन गालनअचि ओसुम प्रय ॥  
जनक राजनि घरि जंनम दारयामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 004 तव पत ईश्वरन राज्य दिचामय ।  
कीकियि वासना फीरिथ गयि ॥  
वनवास करुन मनि तस आमय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 005 हनि-हनि तनि पुरिम बुर्जअ-जामय ।  
वन वन फेरान वनि दितिमय ॥  
मनि मन्ज आमय अन्तयामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥



- 006 सामान त्रावि येलि प्रावि बुर्जअ जामय ।  
लक्ष्मण सअति ह्योथ नीरिथ गयि ।  
पत पत द्रावय शहरअ त गामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 007 जंगलस मँज सत्संग बोजामय ।  
कम कम वीद, कम कम नेर्णय ॥  
श्रूच वीद बूजुथ कन श्रोचामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 008 वन मन्ज राक्षुस द्रीठि आयामय ।  
तस पतअ लारनस वेनतअ कअरमय ॥  
लक्ष्मण जू पतअ तूरि सोजामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 009 रावुण आम बड़ि व्यह क्रूध कामय ।  
लङ्कायि नियनस त हअिवनम भय ।  
जअजिनस, गअहजनस त लअजिनस धामय  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 010 दम दियि तअमि भ्रम दिचामय ।  
कर्मस क्याह करअ बूजनम नय ॥  
धर्मस प्येठ मन दृड़ थाव्यामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥

- 011 राक्षस अन्दि अन्दि रअछि रोजामय ।  
 सअति क्याह ओसुम कीवल दय ॥  
 नेत सुबह शाम राम-राम जप्यामय ।  
 च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 012 गद-गद वानियव यच वजामय ।  
 क्याह सना बोजना ब च्योनुयि पय ॥  
 हलमत आव ओननम पय गामय ।  
 च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 013 वोननम पानअ योत वाति श्री रामय ।  
 दूरिरअकि दोह वनि पूर्ण गयि ॥  
 तमि सन्दि वननअ सअति ब्येयि जुव चामय ।  
 च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 014 आख येलि लङ्कायि प्येठ बोजामय ।  
 गोलथन रावुख त कोरथस क्षेय ॥  
 सअति नियथस ब गम गोस द्रामय ।  
 च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 015 घर वअलि घरिकी ब्रोँठ द्रायामय ।  
 सअरिसयि नगरस शोहरथ गयि ॥  
 भरत राजअ नीरिथ आव नन्द गामय ।  
 च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥

- 016 दोह पअँशि गय क्याह पाप खचामय ।  
कव ज्ञान कअमि क्याह सना वोननय ।  
पर वअवथस बर कअरथस खामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 017 संताप त्रअविथ सोख प्राव्यामय ।  
क्याह कर मर-मर छुम मरनय ॥  
पनन्येव त परदयेव दिचहम पामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 018 लक्ष्मण जू ब्येयि मअचरनि आमय ।  
वनस नेरनुक बोजाम पय ॥  
त्रअविथ गोम मन्दिन्येन शामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 019 जंगलस मन्ज फरियाद दिचामय ।  
व्याद क्याह अअसम पय दर पय ॥  
नाद कअँसि बूजुम न पाय लोसामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 020 बारख-बारख दीयि दीयि चारख गयामय ।  
जोनुम न वुनि ब्येयि जिन्दगी छेयि ॥  
ज्ञान विज्ञान व्यचार आयामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥

- 021 रात-दोह ईश्वरस यी मन्जामय ।  
ही दयअ अअसि नम में चअनी प्रय ॥  
चारव गअयेम जिगरस आख नअनि द्रामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 022 वाल्मीक ऋषे बूजिथ तोर द्रामय ।  
घर नियनस गअयेम धर्मचि प्रय ॥  
ज्ञान हअवनअम अवमान प्राव्यामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 023 दोह अकि बृहस्पत वुदयस चामय ।  
अर्धय रातुक ओस समय ॥  
गोअस द्राम सोरुयि लव-कुश जामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 024 दोख मअशिरअविथ सोख प्राव्यामय ।  
येमि विजि यिम बारनि ज थन प्येय ॥  
भय त्रअविथ वार पअठि यछामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 025 वुनिकेन पादन तल नाम्यामय ।  
पानअ छुख आसवुन जीव बन्धय ॥  
आवारअ कअरथस शहरस त गामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥

- 026 युथ सअम्पनिथ तोति दिचथम पामय ।  
शुरि लअज्ज राज्ञअ कोनअ मशान छेयि ॥  
दयुतथम तीर ब्रोठ थोर किनि द्रामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 027 क्या ज्ञान ईश्वरन क्या लेछामय ।  
दूरिन चअनी कोरुम बुजरअयि ॥  
वुनि वस भूमि तल भूम गछि त्रामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 028 प्रकाश हावतम सोलग्रामय ।  
दीवीद्वारन वअनि दितिमय ॥  
मत रोशतम तोशतम में श्री रामय ।  
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ॥
- 029 वनि में टोठतम चअयि श्री रामय ।  
गरि-गरि छेम में चअनि मति-कामन ॥  
नाव च्योन सोरहा नेत सुबह शामय ।  
च्येयि परमधामय बोवि नय जय ॥

शुभ समाप्त्



११  
कौल जी० एल०



# हिंज्जे वनवुन

Printed at:

**DURGA PRINTING PRESS**

OLD JANIPUR, OPP. PATOLI MORH, JAMMU

PHONE: 549863